नवम्बर-२०२१ ◆ वर्ष १० ◆ अंक ०७ ◆ उदयपुर

ओ३म्

# सत्यार्थ सौरभ

मासिक

नवम्बर-२०२१

**मनुष्य स्वयं में ज्ञानी बनता,**
**और करता है अहंकार।**
**ऐसे रंग न तुम रच सकते,**
**प्रभु कर्त्ता है मेरे यार।**
**पढ़ सत्यार्थप्रकाश देख लो,**
**यही मिलेगा उसमें सार।।**

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० १२१

स्वाद अपने देश का
MDH
मसाले
सेहत के रखवाले
असली मसाले सच - सच
Garam masala
Chunky Chat masala
Chana masala
Kitchen King
Shahi Paneer masala
Kasoori Methi
Achari Aloo masala
Veg Biryani masala
Karahi Paneer masala
DEGGI MIRCH
पद्मभूषण
महाशय धर्मपाल जी
संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०
1919 CELEBRATING 2019
100
Years of affinity till infinity
विश्व प्रसिद्ध एम डी एच मसाले 102 सालों से शुद्धता और गुणवत्ता की कसौटी पर खरे उतरे।
For More Information Visit us on :
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
mdhspicesofficial
SpicesMdh
www.mdhspices.com
SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

# सत्यार्थ सौरभ


**प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ**
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी ( अमेरिका )

**परामर्शदाता संपादक मण्डल**
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

**सम्पादक**
अशोक आर्य

**प्रबन्ध सम्पादक**
भवानी दास आर्य

**प्रबन्ध सहयोग ( ग्राफिक्स डिजाईनर )**
नवनीत आर्य ( मो.9314535379 )

**व्यवस्थापक**
भँवर लाल गर्ग


| सहयोग | भारत | विदेश |
|---|---|---|
| संरक्षक | - 11000 रु. | $ 1000 |
| आजीवन | - 1000 रु. | $ 250 |
| पंचवर्षीय | - 400 रु. | $ 100 |
| वार्षिक | - 100 रु. | $ 25 |
| एक प्रति | - 10 रु. | $ 5 |

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर खाता संख्या : 310102010041518 IFSC CODE- UBIN 0531014 MICR CODE- 313026001 में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२१
कार्तिक शुक्ल तृतीया
विक्रम संवत्
२०७८
दयानन्दाब्द
१९७

**November - 2021**

समाचार २८
हलचल २९


| | |
|---|---|
| ०४ | वेद सुधा |
| १२ | आर्थिक समस्याएँ |
| १५ | स्वामी दयानन्द के आने की जरूरत |
| १७ | सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०९/२१ |
| १८ | संस्कृति |
| २० | पर नारी की सेज पर.......... |
| २२ | कविता- महर्षि दयानन्द |
| २५ | कथा सरित- रणछोड़ दास 'पागी' |
| २६ | स्वास्थ्य- कम खाओ-अधिक जियो |
| ३० | सत्यार्थ पीयूष- ईश्वर की ..... |



सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।


**विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)**

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

| | |
|---|---|
| पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 2000 रु. |
| आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 1000 रु. |
| चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम) | 750 रु. |


**स्वामी** श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १० | अंक - ०७

**मुद्रण** द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

**प्रकाशक**
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

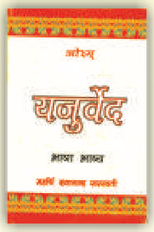


ओ३म्

# वेद सुधा

**हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्।**
**स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।** - यजुर्वेद १३/४

**अर्थ**- जो **( हिरण्यगर्भः )** स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य-चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं, जो **( भूतस्य )** उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का **( जातः )** प्रसिद्ध **( पतिः )** स्वामी **( एकः )** एक ही चेतनस्वरूप था, जो **( अग्ने )** सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व **( समवर्त्तत )** वर्तमान था, **( सः )** वह **( इमाम् )** इस **( पृथिवीम् )** भूमि **( उत )** और **( द्याम् )** सूर्यादि का **( दाधार )** धारण कर रहा है। हम लोग उस **( कस्मै )** सुखस्वरूप **( देवाय )** शुद्ध परमात्मा के लिए **( हविषा )** ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से **( विधेम )** विशेष भक्ति किया करें।

**विज्ञान**-

वर्तमान यह स्थूल प्रकाशमय और प्रकाशरहित द्विविध जगत् विभक्त हुआ परमाणुरूप प्रकृति पर्यन्त अत्यन्त सूक्ष्मावस्था में आकाश के समान एकरस स्थिर होता है। जीव गाढ़ निद्रा सुषुप्ति में लीन होता है। उस समय जगत् का कारण और जीव, उस ईश्वर में लीन होने से वह परमेश्वर ही जागरूक था। इस व्यक्त सृष्टि से पूर्व सृष्टि करने के लिए उस अव्यक्त कारण प्रकृति में ईश्वर ने स्वशक्ति धारण की; इसी को गर्भ कहते हैं। सहस्रांशु समप्रभा वाला सबसे पहले होने से यह 'हिरण्यगर्भ' कहलाया। इसमें प्रकाशमय और अप्रकाशमय दोनों प्रकार का अदृश्य जगत् विद्यमान था।

हिरण्यगर्भ शब्द का अर्थ है- हिरण्य=ज्योति, अमृत, आदित्य, जीवात्मा, यशः सत्कीर्ति, धन्यवाद और इन्द्र अर्थात् सूर्य, वायु और अग्नि। इस प्रकार हिरण्यगर्भ के अर्थ हुए- ज्योति अर्थात् विज्ञान गर्भ, अर्थात् जिसके स्वरूप में हैं, ज्योति अर्थात् हिरण्य=प्रकाश, ज्योति=अमृत=मोक्ष, ज्योति=आदित्य=प्रकाशस्वरूप सूर्यादि लोक, यशः सत्कीर्ति- जो धन्यवाद, ज्योति-जीवात्मा और ज्योति=इन्द्र अर्थात् सूर्य, वायु और अग्नि-ये सब जिसके स्वरूप या सामर्थ्य में हैं, ऐसा जो परमेश्वर है, उसी को 'हिरण्यगर्भ' कहते हैं। इस प्रकार हिरण्यगर्भ का स्पष्ट अर्थ हुआ- जो स्वप्रकाशस्वरूप और जो प्रकाश करने हारे सूर्य-चन्द्रमादि पदार्थों को उत्पन्न करके धारण कर रहा है।

'जो (भूतस्य) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (पतिः) स्वामी (एकः) एक ही चेतनस्वरूप था, जो (अग्ने) सब जगत् में उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्त्तत) वर्तमान था।'

उत्पन्न होना किसको कहते हैं? उत्पन्न होना उसको कहते हैं जो अनेक द्रव्यों के संयोग विशेष से स्थूल पदार्थों का होना। जो संयोग से उत्पन्न होता है, वह बनानेवाले की अपेक्षा रखता है और वह उससे पूर्व भी होना चाहिए। क्योंकि जो वस्तु संयोग से उत्पन्न होती है, उसका विनाश भी होता है। जो द्रव्य संयोग और वियोग से उत्पन्न और नष्ट होता है उसी को कार्य और अनित्य कहते हैं। और जो संयोग और वियोग से अलग है, जिसकी न कभी उत्पत्ति और न कभी नाश होता है, वह पदार्थ एक परमेश्वर और जगत् का कारण है। वह सदा एकरस और अखण्ड बना रहता है। ऐसा जो परमेश्वर है, वही संयोग और वियोग के आरम्भ नियमों का कर्त्ता और आदिकारण था। नियमों के कर्त्ता और आदिकारण के अभाव में संयोग और वियोग का होना असम्भव है। इसीलिए सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वह एक अर्थात् असहाय, अद्वितीय, जो सृष्टि रचना करने में किसी की सहायता की अपेक्षा (सर्वशक्तिमान् होने से) नहीं रखता है, वर्तमान था।

'(सः) वह (इमाम्) इस (पृथिवीम्) भूमि (उत) और (द्याम्) सूर्यादि को (दाधार) धारण कर रहा है।'

वह परमात्मा इस पृथिवी- भूमि अर्थात् प्रकाशरहित भूगोल (उत) और (द्याम्) प्रकाश सहित सूर्यादि लोकों का धारण कर रहा है। उत्पत्ति से पूर्व जब ये अव्यक्त कारण में थे तब भी वही धारण कर रहा था और उत्पत्ति के बाद भी वही धारण कर रहा है। विशेष ध्यातव्य यह है कि पृथिवी से लेकर सूर्यपर्यन्त जगत् एक सृष्टि अर्थात् एक ब्रह्माण्ड कहाता है। इस ब्रह्माण्ड में ईश्वर ने

निरन्तर अच्छे प्रकार दर्शन के लिए सब पदार्थों के प्रकाश के निमित्त प्रत्यक्ष सूर्यलोक, सब लोकों के बीच में स्थापित किया है। इसी से सबका धारण वा आकर्षण आदि प्रयोजन होते हैं। यही सूर्य सब प्रकाशरहित पृथिव्यादि लोकों को प्रकाशित करता हुआ आकर्षण से सब लोकों को अपनी-अपनी कक्षा में घुमाता है। यह नियम प्रति ब्रह्माण्ड जानना चाहिए।

प्रश्न- क्या ब्रह्माण्ड-सृष्टि अनेक हैं?

उत्तर- अगर अनेक ब्रह्माण्ड नहीं हैं तो ईश्वर के उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय-इन तीन कर्मों की संगति नहीं लग सकती है, ये तीन कर्म स्वाभाविक तथा नित्य हैं। मान लेते हैं कि एक ही ब्रह्माण्ड है, तो जिस समय इसकी उत्पत्ति हो रही थी, उस समय स्थिति और प्रलय नहीं; जिस समय स्थिति है, उस समय उत्पत्ति और प्रलय नहीं; जिस समय प्रलय हो रही थी उस समय उत्पत्ति और स्थिति नहीं। और जब सारे ब्रह्माण्ड का महाप्रलय हो गया, तब ईश्वर क्या कर रहा था? तब उसके स्वाभाविक ज्ञान-बल-क्रिया का क्या उपयोग है? क्योंकि उस ईश्वर के ज्ञान-बल और क्रिया नित्य हैं, तो उत्पत्ति स्थिति और प्रलय भी नित्य होने चाहिए। इसीलिए इस अनन्त आकाश में अनेक ब्रह्माण्ड हैं और उस ब्रह्माण्ड समूह को 'ब्रह्मवन' कहते हैं। इस वन में किसी ब्रह्माण्ड उत्पत्ति, किसी ब्रह्माण्ड की स्थिति और किसी ब्रह्माण्ड की प्रलय हो रही होती है, इसी से उस ईश्वर की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय तीनों नित्य कर्मों की संगति होती है; तथा जो पृथिवी से लेकर सूर्यपर्यन्त= ब्रह्माण्ड एक सृष्टि है, उसमें सूर्य के धारण वा आकर्षण को नियम से सब लोकों को प्रकाशित करने के साथ सबको अपने आकर्षण में रखकर अपनी अपनी कक्षा में लोकों को भ्रमण कराता है, यह प्रति ब्रह्माण्ड का नियम है। मंत्र देखिये-

**इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद् दिवि।**
**वि गोभिरद्रिमैरयत्।** - ऋग्वेद १/७/३

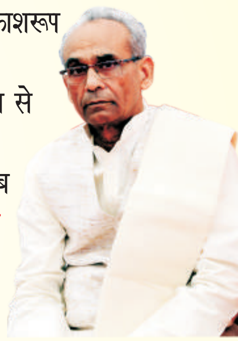

सृष्टि रचने की इच्छा करने वाले ईश्वर ने सब लोकों में दर्शन धारण और आकर्षण आदि प्रयोजनों के लिए प्रकाशरूप सूर्यलोक को सब लोकों के बीच में स्थापित किया है। इस प्रकार यह नियम हर एक ब्रह्माण्ड का नियम है।

'उस (कस्मै) सुखस्वरूप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिए (हविषा) ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से विशेष भक्ति किया करें।'

उस सुखस्वरूप शुद्ध अर्थात् प्रकाशमान परमात्मा के लिए जैसे प्रत्येक ब्रह्माण्ड में सूर्य प्रकाशमान है, वैसे सब जगत् में परमात्मा प्रकाशमान है। उस परमेश्वर की प्राप्ति के लिए ग्रहण करने योग्य अर्थात् यम-नियम सम्बन्धी कर्म जो ग्रहण करने योग्य हैं उनसे योगाभ्यास अर्थात् अन्तर्यामी परमेश्वर को अपने आत्मा से युक्त करते हैं, वे सूर्य में किरणों के समान परमेश्वर में सब ओर से प्रकाशित होते हैं। इसके लिए अतिप्रेम से विशेष भक्ति किया करें।

- आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली
साभार- उपासना-विज्ञान

## विश्व भर से आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

अद्वितीय, अद्भुत एवं ज्ञानवर्धक। यहाँ पर सम्पूर्ण विश्व में, हर क्षेत्र में, चाहे चिकित्सा हो या औषधीय ज्ञान या वेद-शास्त्र सभी की जानकरी मिलती है। सम्पूर्ण सृष्टि की रचना को चलाने के लिए ऋषियों ने वेदों का सरल भाषा में उच्चारण कर ज्ञान दिया। इस संसार को चलाने का महत्वपूर्ण योगदान रहा है तो भारतीय संस्कृति का, और इसी संस्कृति का ज्ञान आज नवलखा महल में आकर प्राप्त हुआ। एक बार आवश्यक रूप से इसे देखने पर ही ज्ञान का विस्तार व ज्ञानवर्धन होता है। यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, अगर इसे प्राथमिक ज्ञानशाला भी कहा जाए तो। प्रताप गौरव से भी अधिक ज्ञानवर्धक व रुचि पूर्ण।

- अरविंद जारोली, नगर निगम-उदयपुर

मैं श्रीमती हर्षा पाटीदार अपने पति श्री दयालाल पाटीदार व बच्ची सुश्री जाह्नवी पाटीदार ने आज दिनांक १६ अक्टूबर २०२१ को नवलखा महल के दर्शन किए। स्वामी जी के जीवन परिचय के बारे में दर्शन प्राप्त किये। हमें बहुत अच्छा लगा। स्वामी जी द्वारा प्रेरित वैदिक मार्ग का सचमुच एक महान् संस्कृति का ज्ञान इस चित्रदीर्घा के द्वारा सबको कराया जा रहा है। हमारी आधुनिक पीढ़ी इस संस्कृति से अपरिचित है किन्तु इसमें जो गुण तत्व हैं वो अन्यत्र संसार में कहीं नहीं मिलती है। वाकई हमारी भारतीय संस्कृति हमारे ऋषि-महर्षि महान् थे जिन्होंने संसार को आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया। - हर्षाराम पाटीदार

# राष्ट्रपिता का नारी सम्मान-राहुल का बयान

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गाँधी महिला सम्मान को लेकर भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर जमकर बरसे। अखिल भारतीय महिला कांग्रेस के स्थापना दिवस के अवसर पर १५ सितम्बर २०२१ को बोलते हुए कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गाँधी ने एक विचित्र सवाल पूछ लिया कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की तस्वीरों में आसपास २-३ महिलाएँ दिखती हैं, लेकिन मोहन भागवत की तस्वीर में कोई महिला क्यों नहीं दिखती है? राहुल के अनुसार भागवत महिलाओं का सम्मान नहीं करते, क्योंकि उनके साथ महिलायें नहीं होतीं।

इसका अर्थ हुआ कि जो लोग महिलाओं से घिरे रहते हैं, राहुल गाँधी की दृष्टि में वे ही महिलाओं का सम्मान करते हैं और जो महिलाओं से नहीं घिरे रहते वे महिलाओं का सम्मान नहीं करते। यह आज तक की सबसे विचित्र कसौटी नारी सम्मान की हमने सुनी है। यह तो समझा जा सकता है कि राहुल गाँधी को भारतीय परम्पराओं, संस्कृति और इतिहास का तनिक भी ज्ञान नहीं है परन्तु इस कसौटी को लागू करने का अर्थ तो यह होगा कि आजकल प्लेबॉय छवि रखने वाले लोग राहुल की दृष्टि में महिलाओं का सम्मान करते हैं और वे महापुरुष जिन्होंने अपना जीवन राष्ट्र और मानवता की सेवा में गुजार दिया और इस धुन में जीवन की अन्य आवश्यकताओं को बिल्कुल भुला दिया, वे महिलाओं का सम्मान नहीं करते। यह एकदम नई और बिल्कुल अलग परिभाषा है।

जो भी हो हमारी सोच थी कि राहुल गाँधी की टिप्पणी से गाँधी जी के महिलाओं से घिरे रहने की बात से, एक बार पुनः उनके व्यक्तिगत जीवन के उन पन्नों पर चर्चा प्रारम्भ होगी जो कही इतिहास के गड्ढे में गाँधी जी की महानता को स्थापित करने के लिए दफन कर दिए गए हैं। क्योंकि इस देश में गाँधी जी एक भगवान का स्थान प्राप्त कर चुके हैं, और राजनीतिक रोटियाँ सेकने के चक्कर में कोई भी राजनेता गाँधी जी पर, निज आत्मा में सत्य को जानते हुए भी कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता। इस देश में कुछ बातें निश्चित रूप से ऐसी श्रेणी में आ गई हैं कि जिनके औचित्य और अनौचित्य पर कोई भी चर्चा नहीं करता। क्योंकि इससे उन्हें हानि होने की सम्भावना दिखती है। गाँधी जी के सम्बन्ध में लिखी एक विचारोत्तेजक पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाने की घटना को लक्ष्य कर ब्रिटिश विद्वान् मेघनाद देसाई ने कहा कि इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध दिखाता है कि 'भारत अभी राजनीतिक रूप से भीरू है जो कठिन प्रश्नों एवं आलोचनाओं का सामना करने की ताब नहीं रखता'।

हमने जितना गाँधी जी को पढ़ा है, उस आधार पर हमारा मानना है कि निस्संदेह उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की भावना को जन-जन तक व्याप्त करने में जो भूमिका निभाई वह अद्भुत और अतुलनीय है। गाँधी जी के अन्दर दूसरों को प्रभावित करने की लगभग अलौकिक क्षमता थी। उनके आदर्श उच्च थे। उनसे असहमत व्यक्ति भी उनके सामने नतमस्तक हो जाता था, और ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है कि गाँधी जी ने अपनी इस चमत्कारिक शक्ति का उपयोग (?) अपनी अनुचित बातों को मनवाने में किया। क्या आपको यह आश्चर्यजनक नहीं लगता कि जब स्वतंत्र भारत के प्रधान को चुनने का प्रश्न आया तो १५ प्रान्तों में से

एक ने भी नेहरू जी को नहीं चुना जबकि सरदार पटेल के पक्ष में १२ मत थे। पर गाँधी जी की इच्छा को देखते हुए नेहरू जी को प्रधानमंत्री बनाया गया। इस प्रकार स्वतंत्र भारत के लोकतंत्र का प्रारम्भ पूर्णतः अलोकतांत्रिक तरीके से हुआ। इस और ऐसे ही अनेक असम्भवों को सम्भव बनाने में गाँधी जी की जिद और इस चुम्बकीय रहस्यमयी शक्ति के दर्शन होते हैं।

गाँधी जी की अन्तिम दिनों की साथी मनु बेन अपनी डायरी में एक ऐसी ही घटना का वर्णन करती हैं जो निश्चित रूप से ऐसी सहस्रों घटनाओं में से एक है और लोगों का गाँधी जी में जो विश्वास था उसे प्रदर्शित करती है। वे लिखतीं हैं कि जब गाँधी जी नोआखली के बाद बिहार प्रवास में एक बड़ी सभा को सम्बोधित करके निकले तो श्रद्धालु जन जहाँ उनकी कर्णवेधी जय-जयकार कर रहे थे, वहीं इस आशा से बापू की चरणरज लेने का प्रयास कर रहे थे जिससे कि वे समझते थे कि उनका जीवन पवित्र और धन्य हो जाएगा।

चर्चा के लिए, लेखन के लिए गाँधी जी के ब्रह्मचर्य के प्रयोग एक असुविधाजनक विषय प्रतीत होता है। परन्तु सत्य के उद्घाटन में संकोच न करना ही भारतीय परम्परा रही है। और जब राहुल कहते हैं कि गाँधी जी के निकट महिलाओं का होना महिला-सम्मान का प्रतीक है तो उनको स्वयं को और उनकी बात पर जिन महिलाओं ने तालियाँ बजायीं उनको और जो राहुल से सहमति रखते हैं उन सबको जानना चाहिए कि गाँधी जी की ऐसी तस्वीरें महिला सम्मान की नहीं महिला अपमान की तस्वीरें हैं। जिस तस्वीर का सन्दर्भ राहुल दे रहे हैं उनमें एक आभा बेन हैं जो गाँधी जी के भतीजे कनु भाई की पत्नी हैं और दूसरी मनु बेन हैं जो गाँधी जी के एक चाचा की प्रपौत्री हैं। इन्ही मनु बेन ने, जब गाँधी जी और कस्तूरबा आगा खान पैलेस में बन्दी थे तब कस्तूरबा की सेवा की और आगे चलकर वे गाँधी जी की निजी सचिव बन गयीं। जिनका कार्य गाँधी जी कि परिचर्या से सम्बन्धित सभी कार्य जिनमें उन्हें नहलाना भी शामिल था, सम्पन्न करना था। ७७ वर्ष के गाँधी जी ने १६ वर्ष की सुन्दरी मनु को अपने ब्रह्मचर्य के प्रयोगों में शामिल करते हुए शब्दों का ऐसा संसार रचा कि मनु को दृढ विश्वास हो गया कि वे गाँधी जी के साथ निर्वस्त्र सोकर एक अत्यन्त पवित्र यज्ञ का हिस्सा बन रहीं हैं। मनु ने अपनी डायरी में इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है। मनु की डायरी जो २००० पन्नों में विस्तीर्ण हैं तथा इण्डिया टुडे के द्वारा प्रकाश में लायी गयीं हैं अध्येताओं का मानना है कि उनको पढ़कर एक सहृदय व्यक्ति हिल सकता है तथा गाँधी जी के अनेक आचरणों के बारे में सोचने को विवश हो जाएगा।

२८ दिसम्बर,१६४६ को बिहार के श्रीरामपुर में दर्ज प्रविष्टि में मनुबेन ने लिखा है, 'बापू मेरी माता हैं। वे ब्रह्मचर्य के प्रयोगों के माध्यम से मुझे ऊँचे मानवीय फलक पर ले जा रहे हैं। ये प्रयोग चरित्र निर्माण के उनके महायज्ञ के अंग हैं। इनके बारे में कोई भी उलटी-सीधी बात सबसे निन्दनीय है।' इससे नौ दिन पहले ही मनुबेन गाँधी जी के साथ आईं थीं। क्या इसे मनु का brain wash नहीं कहेंगे? गाँधी जी के शब्दों पर पूर्ण विश्वास करते हुए मनु ने गाँधी जी के सचिव प्यारेलाल जी का विवाह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। जबकि प्यारेलाल जी मनु से विवाह करने को लालायित थे। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि बाद में इस तथाकथित उच्च उद्देश्य पर स्वयं मनु को भी शंका होने लगी थी अथवा १६ वर्ष की वह बालिका एक पुरुष के समीप नग्न सोने के परिणामस्वरूप अपने स्वयं के शरीर में होने वाली उथल-पुथल के असहनीय चरम तक पहुँच चुकी थी, जिस पर गाँधी जी ने कभी ध्यान नहीं दिया, अतः मनु ने ही गाँधी जी के साथ नग्न सोने से इनकार कर दिया। मनु बेन की डायरी से यह प्रमाण भी मिलता है कि गाँधी जी के साथ नग्न सोने वाली रात्रि-चर्या अंततः मनु के ही आग्रह से बन्द हुई। गाँधी जी ने अपने उस विवादास्पद कृत्य को अनेकानेक निकट सहयोगियों, परिवारजनों के आग्रह के बावजूद बन्द नहीं किया। तरह-तरह की दलीलें देते रहे। पर आखिरकार उन्हें लाचारी में इसे बन्द करना पड़ा। मनु ने अपनी डायरी में हेमचर, बिहार प्रवास के समय २ मार्च १६४७ को लिखा है 'आज बापू को बापा को एक गुप्त पत्र मिला। उन्होंने इसे मुझे पढ़ने को दिया। यह पत्र दिल को इतना छू लेने वाला था कि मैंने बापू से आग्रह किया कि बापा को संतुष्ट करने के लिए आज से मुझे अलग सोने की अनुमति दें।' इस

प्रकार, ठक्कर बापा की वेदना से द्रवित होकर, गाँधी जी की इच्छा के विरुद्ध, मनु ने अलग सोने की अनुमति माँगी। तब से यह प्रयोग, यज्ञ, आदि सहसा बन्द हो गया। गाँधी जी के सहयोगियों ने शान्ति की साँस ली।

जहाँ तक ब्रह्मचर्य प्रयोग के माध्यम से 'काम' के प्रति समर्पण न करने की अपनी शक्ति को जाँचने की बात है यह समझ से परे है कि गाँधी जी को इसकी आवश्यकता क्या थी? जिस व्यक्ति के ऊपर पराधीन राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने का और इस महायज्ञ से जुड़े करोड़ों मनुष्यों के पथ प्रदर्शन का महनीय दायित्व हो और विशेष रूप से जब स्थितियाँ ऐसी बन चुकी हों कि उनका आदेश भगवान के आदेश की भाँति मान्य होने लगा हो, तो उस व्यक्ति के पास 'काम' के बारे में सोचने का अवकाश ही कहाँ हो सकता है।

एक बार अखण्ड ब्रह्मचर्य के धनी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज से जब स्वामी श्रद्धानन्द ने पूछा कि- 'क्या कभी 'काम' ने आप पर आक्रमण नहीं किया? महर्षि ने क्षण भर विचार कर उत्तर दिया कि स्मरण नहीं होता। हो सकता है कि 'काम' कभी आया हो और मुझे व्यस्त देखकर चला गया हो।' स्पष्ट है कि जो लोग किसी गम्भीर कार्य में एक ध्येय को लेकर सर्वात्मना जुट जाते हैं उन्हें कामवासना स्पर्श भी नहीं करती।

इससे भी महत्वपूर्ण यह है गाँधी जी को ऐसे परीक्षण करने की सनक भी थी तो यह परीक्षा तो अपनी धर्मपत्नी जिसके साथ उम्रभर एकपत्नी व्रत का वचन उन्होंने विवाह संस्कार में दिया होगा, के साथ भी तो कर सकते थे। बा के साथ सन् १९०६ में उन्होंने शारीरिक सम्बन्धों का विच्छेद कर लिया था। जिसके साथ वे इतने कामासक्त थे कि पिता की बीमारी और मृत्यु के समय में भी सम्बन्धरत थे, उन्हीं को अपने प्रयोग का उपकरण क्यों नहीं बनाया? हमने यहाँ जानबूझकर उपकरण शब्द का प्रयोग किया है। गाँधी जी के इस प्रयोग में भाग लेने वाली हर महिला उपकरण नहीं तो क्या थी? जिस प्रकार से किसी प्रयोग में किसी उपकरण से कैसे काम लिया जाय यह प्रयोगकर्त्ताओं के हाथ में होता है, उपकरण तो एक निर्जीव वस्तु मात्र है, उसे जिस प्रकार चाहे प्रयोगकर्त्ता काम में ले, चाहे जब उसे छोड़ अन्य उपकरण को काम में ले, उपकरण की अपनी कोई इच्छा नहीं हो सकती यही स्थिति यहाँ प्रतीत होती है। गाँधी जी के इन महान् प्रयोगों में भाग लेने वाली हर स्त्री की अपनी इच्छा का कोई महत्त्व नहीं था। गाँधी जी तो महान् थे, मान लेते हैं कि उन्होंने काम को अपने वश में कर लिया था परन्तु उनकी 'प्रयोग-सहधर्मिणी' भी उसी स्तर के संयम की स्वामिनी थी, यह गाँधी जी जानते थे? जिस समय नग्न-शयन अथवा नग्न-स्नान के समय गाँधी जी अपनी वासना पर नियंत्रण रखे हुए थे, संगिनी महिला की क्या मनः स्थिति थी? क्या उसने भी दुर्जेय वासना पर विजय प्राप्त कर ली थी? अगर ऐसा नहीं था तो जीवन के सात दशक देख चुके बूढ़े ही सही एक पुरुष, चाहे वह पराया ही क्यों न हो, के साथ नग्न सोते समय क्या वे कामासक्त नहीं हुयीं? और उसकी पूर्ति न होने के कारण क्या वह कुंठा से ग्रसित नहीं हुयी होंगी? उसका क्या? क्या यही महिलाओं का सम्मान है? कभी-कभी हमें लगता है कि गाँधी जी के साथ इन प्रयोगों के कारण मनु का सम्पूर्ण जीवन कुंठा में व्यतीत हुआ, वह, जो संसार में सामान्य महिला के रूप में जीकर बहुत कुछ प्राप्त कर सकती थी उसने अवसादपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए गुमनामी के अन्धेरे में दम तोड़ दिया।

महात्मा जी ने मनुबेन के मन पर कितनी गहरी छाप छोड़ी थी, इसके दर्शन १९ अगस्त,१९५५ को जवाहर लाल नेहरू के नाम लिखे गए मोरारजी देसाई के पत्र में होते हैं। मनुबेन एक "अज्ञात रोग" के इलाज के लिए बाम्बे हास्पिटल में भर्ती थीं। वहाँ अगस्त में उनसे मिलने के बाद मोरारजी देसाई ने लिखा- "मनु की समस्या शरीर से अधिक मन की है। लगता है, वे जीवन से हार गई हैं और सभी प्रकार की दवाओं से उन्हें एलर्जी हो गई है।"

पुनः विचार करने योग्य प्रश्न है कि पत्नी को अपने साथ नग्न सुलाकर अपने संयम की परीक्षा क्यों नहीं हो सकती थी? क्यों गाँधी जी ने अन्य महिलाओं को चुना? और केवल एक ही अन्य महिला के साथ ये प्रयोग किये हों, वे यहीं तक सीमित नहीं रहे, इन महिलाओं की एक लम्बी फेहरिस्त गाँधी जी पर कार्य करने वाले मनीषी प्रस्तुत करते हैं। ऐसा क्यों? बार-बार अपने प्रयोग के इन उपकरणों को बदलने में गाँधी जी का क्या हेतु था?

मनुबेन ने अंततोगत्वा गाँधी जी के साथ सोने से मना कर दिया यहाँ तक कि गाँधी जी के प्रति आकण्ठ भक्तिभाव में डूबे ठक्कर बापा को गाँधी जी को एक कठोर पत्र लिखना पड़ा।

गाँधी जी के इन प्रयोगों को उनके किसी साथी ने दैवीय या अलौकिक नहीं माना। इसका प्रमाण यही है कि उनमें से लगभग सभी ने गाँधी जी को इस तथाकथित महान् यज्ञ को बन्द करने को कहा, परन्तु गाँधी जी ने एक की भी नहीं सुनी। सम्भवतः नेहरू जी ने गाँधी जी का इस बात को लेकर विरोध नहीं किया शायद इसका कारण यह रहा होगा कि वे स्वयं भी इसी प्रकार महिलाओं का सम्मान करने में विश्वास रखते हों। आखिर पामेला एण्डरसन की किताब तथा एडविना माउण्टबेटन के शव के सिरहाने रखे पत्र, क्या यही कुछ नहीं कह रहे, जिस पर राहुल जी को गर्व है?

सम्पूर्ण भारतीय इतिहास का आप समग्रता के साथ अवलोकन कर लीजिये। एक भी ऐसा महापुरुष नहीं मिलेगा जिसने गाँधी जी जैसे ब्रह्मचर्य के प्रयोग किये हों। क्या देवव्रत भीष्म ने अपने अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत को कभी इस प्रकार जाँचा? क्या महावीर, अखण्ड ब्रह्मचारी हनुमान ने ऐसे प्रयोग किये थे? क्या शंकर, विवेकानन्द और दयानन्द ने कभी ऐसे प्रयोगों के बारे में सोचा भी? गृहस्थी की बात करें तो गौतम बुद्ध जब गृहस्थ के बन्धन तोड़ अध्यात्म के क्षेत्र में उतर गए तो क्या उनको स्वयं की संयम शक्ति का परीक्षण करने की आवश्यकता पड़ी? नारियों को सम्मान देना नारियों से घिरे रहना है तो हमें राहुल जी की भाँति स्वीकार करना पड़ेगा आजकल के सिने अभिनेता-नेता नारियों का सर्वाधिक सम्मान करते हैं?

प्रतीत होता है कि राहुल भारतीयता से सर्वथा अनजान हैं वरना नारियों को, इस युग में समग्रता के साथ बराबर ही नहीं उच्चतम स्थान प्रदान करने वाले तथा नारी असम्मान की प्रत्येक प्रथा को समूल नष्ट करने का दर्शन प्रतिपादित करने वाले महर्षि दयानन्द के बारे में अवश्य जानते। नारी सम्मान का सबसे प्रबल उद्घोषक नारियों से घिरा नहीं रहता था।

राहुल तो खैर नहीं जानते परन्तु गाँधी जी तो निश्चित रूप से परिचित थे। दयानन्द ऊर्ध्वरेता ब्रह्मचारी थे पर उन्हें अपने ब्रह्मचर्य की परीक्षा के लिए नारियों को साथ सुलाने की आवश्यकता नहीं थी। फिर गाँधी जी ने उनके मार्ग का अनुसरण क्यों नहीं किया?

भारतीय परम्परा के ज्ञाता गाँधी जी भली प्रकार जानते थे कि यहाँ 'काम' को जीवन में अत्यन्त सीमित स्थान दिया गया है। आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत प्रथम २५ वर्ष ज्ञानार्जन के समय गुरु के सान्निध्य में केवल विद्याध्ययन में विद्यार्थी अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाए, गुरु का दायित्व था कि वे ऐसा वातावरण सृजित करें कि कामवासना किशोरों वा युवकों के निकट भी न फटके। पूर्ण ब्रह्मचर्य साधना आवश्यक थी। जीवन के द्वितीय भाग में जब पुरुष व स्त्री गृहस्थ में प्रवेश करते हैं तो 'काम' का प्रवेश भी होता है, परन्तु वैदिक मनीषा इसको भी केवल संतानोत्पत्ति तक सीमित रखना चाहती है। (भगवान श्रीकृष्ण तथा देवी रुक्मिणी संतानोत्पत्ति से पूर्व १२ वर्ष ब्रह्मचर्य पूर्वक रहते हैं, महात्मा गाँधी के आराध्य श्री राम १४ वर्ष (लगभग १३ वर्ष साथ-साथ) भगवती सीता के साथ वन में विचरण करते हैं जहाँ वे ऋतुएँ भी अपनी पूर्ण छटा के साथ आती हैं जिनके वाणों पर चढ़कर काम देवता अपना मायाजाल फैलाते हैं, परन्तु कामदेवता का प्रवेश राम की कुटिया में नहीं हो पाता। दोनों बिना सन्तान के ही वनवास से लौटते हैं। राम की तो बात ही क्या यतिवर लक्ष्मण तो उर्मिला से १४ वर्ष दूर रहकर उत्कृष्टतम ब्रह्मचर्य का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं परन्तु एक भी बार अपने संयम की जाँच नहीं करते हैं) स्पष्ट है कि अन्य प्रायः सभी स्त्री पुरुषों की भाँति गाँधी जी भी काम को सन्तानोत्पत्ति तक सीमित रखने के इस निर्देश का पालन नहीं कर सके।

आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत अब प्रौढ़ावस्था आती है तो वानप्रस्थ आश्रम का प्रावधान है। इस आश्रम में 'काम' का पूर्ण निषेध है यद्यपि चाहे तो पत्नी को साथ रख सकते हैं परन्तु काम सम्बन्धों की स्थापना के वास्ते नहीं वरन् मानव जीवन के उच्चतम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए साधनारत् होने के लिए। चतुर्थ सन्यासाश्रम की तो बात क्या कहें वहाँ तो काम दूर से भी झाँक नही सकता।

इनमें से कोई भी प्रसंग गाँधी जी को प्रेरित नहीं कर सका। उन्होंने बा के साथ १९०६ में विषय प्रसंगों को त्याग दिया था और एक प्रकार से वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर लिया था। प्रतीत होता है कि उनका लक्ष्य भी मानव की उच्चतम स्थिति को प्राप्त

करना था परन्तु पता नहीं क्यों ब्रह्मचर्य प्रयोगों के नाम पर वे मायाजाल में लिपटे रहे। गाँधी जी के ब्रह्मचर्य प्रयोगों से सम्बन्धित सामग्री का विशद् परीक्षण करने वाले डॉ. शंकर शरण निष्कर्षात्मक रूप में लिखते हैं- 'गाँधी जी काम-भावना की दुर्दम्य शक्ति से जीवनपर्यंत आक्रान्त रहे। उन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत, अर्थात् पत्नी के साथ शारीरिक सम्बन्ध का त्याग सन् १९०६ में ही ले लिया था। पर वे स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के आकर्षण से कभी मुक्त नहीं हो सके। जिसे गाँधी जी ने जीवन के उत्तरार्ध में 'ब्रह्मचर्य प्रयोग' कहा, उसके गम्भीर अध्ययन के बाद वह मोह और आकर्षण ही लगता है। स्वयं गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा लिखने में तथा उस के बारह वर्ष बाद भी स्वीकार किया है कि वे 'इन्द्रिय नियन्त्रण' रखने में कठिनाई महसूस करते हैं। अर्थात् ५७ और ६९ वर्ष की आयु में भी उनका ब्रह्मचर्य एक सचेत प्रयत्न था, सहजावस्था नहीं। गाँधी जी ने यह छिपाया नहीं, यह उनकी महानता थी। किन्तु उन प्रयोगों में कोई महानता नहीं थी।' गाँधी जी के ब्रह्मचर्य के प्रयोग क्या थे? ऐसे प्रयोगों के पीछे गाँधी जी की क्या धारणा थी? कारण क्या थे, ऐसे प्रयोग करने के? और इन प्रयोगों की गाँधी जी के जीवन में क्या अहमियत थी? ऐसे ही कुछ असहज सवालों पर यह पुस्तक (डॉ. शंकर शरण द्वारा लिखित-गाँधी के ब्रह्मचर्य के प्रयोग) प्रकाश डालती है। गम्भीर अध्ययन के बाद लिखी यह पुस्तक प्रामाणिक उद्धरणों पर आधारित है और लेखक का कहना है कि 'यह एक प्रयास है ताकि हम प्रत्येक विषय पर पूर्वाग्रहरहित होकर जानकारी प्राप्त करने तथा सोचने-विचारने के प्रति सचेत हों।'

मनु बेन के निधन के चार दशक के बाद उनकी दस डायरियाँ इण्डिया टुडे को देखने को मिलीं। मनु बेन की डायरी मूल गुजराती में है और ११ अप्रैल १९४३ से २१ फरवरी १९४८ तक की तारीखें उस पर हैं। २००० पृष्ठों में फैली हैं। प्रायः हर पृष्ठ पर गाँधी जी के हस्ताक्षर बताए जाते हैं जो उन्हें निस्सन्देह एक प्रामाणिक स्रोत के रूप में स्थापित कर देते हैं। इनसे पता चलता है कि गाँधी जी के प्रयोगों का मनु बेन के मन पर क्या असर पड़ा। इनसे गाँधी जी के सम्पर्क में रहने वाले लोगों के मन में पनपती ईर्ष्या और क्रोध की भावना भी उजागर होती है। इनमें अधिकतर युवा महिलाएँ थीं। डायरियों का लेखन उस समय शुरू हुआ जब गाँधी जी के भाई की पोती मनु बेन पुणे में आगा खाँ पैलेस में नजरबन्द गाँधी जी की पत्नी कस्तूरबा की सेवा करने आई थीं। गाँधी जी और कस्तूरबा को १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान इस पैलेस में नजरबन्द रखा गया था। बीमारी के अन्तिम दिनों में मनुबेन ने कस्तूरबा की सेवा की। गाँधी जी के निधन के २२ दिन बाद मनुबेन ने डायरी लिखना बन्द कर दिया।

एक और तथ्य है जिस पर विचार होना चाहिए कि गाँधी जी के प्रबलतम अनुयायी भी उनके इन प्रयोगों से असहमत थे बल्कि रुष्ट थे, पर गाँधी जी इन्हें छोड़ने को तैयार नहीं थे चाहे कुछ भी हो जाय। स्पष्ट है कि गाँधीजी के ये साथी गाँधी जी के इन प्रयोगों को इनके यथार्थ स्वरूप में ही देखते थे। गाँधी जी के द्वारा इनके इर्द-गिर्द बुने शब्दों के जाल द्वारा इन्हें महायज्ञ सिद्ध करने का प्रयत्न उन पर अप्रभावी ही रहा।

३१ जनवरी, १९४७ को बिहार के नवग्राम में दर्ज प्रविष्टि में मनु बेन ने गाँधी जी के घनिष्ठ अनुयायी किशोरलाल मशरूवाला के गाँधी जी को लिखे पत्र का उल्लेख किया है, जिसमें उन्होंने मनु को 'माया' बताते हुए महात्मा से उसके चंगुल से मुक्त होने का आग्रह किया था। इस पर गाँधी जी का जवाब था 'तुम जो चाहे करो लेकिन इस प्रयोग के बारे में मेरी आस्था अटल है।' मनुबेन और गाँधी जी जब बंगाल में नोआखली की यात्रा कर रहे थे तब उनके दो सचिव आर.पी. परशुराम और निर्मल कुमार बोस गाँधी जी के आचरण से नाराज होकर उनका साथ छोड़ गए थे। यही निर्मल कुमार बोस बाद में भारत की ऐंथ्रोपोलोजिकल सोसायटी के डायरेक्टर बने। उन्होंने गाँधी जी पर एक पुस्तक भी लिखी है। सरदार वल्लभभाई पटेल ने २५ जनवरी, १९४७ को लिखे एक पत्र में गाँधी जी से कहा था कि वे यह प्रयोग रोक दें। पटेल ने इसे गाँधी जी की 'भयंकर भूल' बताया था जिससे उनके अनुयायियों को 'गहरी पीड़ा' होती थी। यह पत्र राष्ट्रीय अभिलेखागार में सरदार पटेल के दस्तावेजों में शामिल है। आखिर ऐसा क्यों था कि गाँधी जी के सभी प्रशंसक उनके इस कार्य को गर्हित मानते थे (संभवतः नेहरू जी को

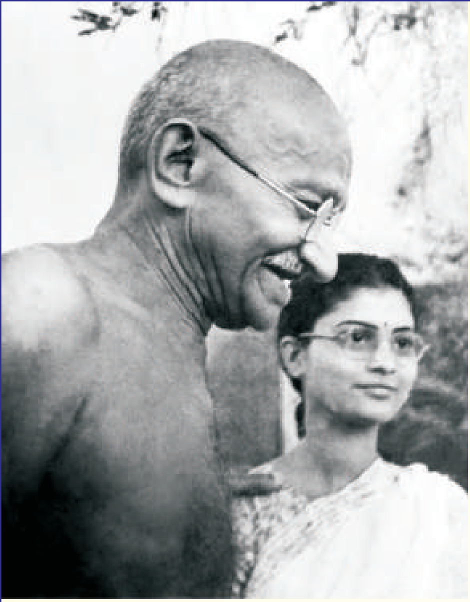

छोड़कर)?

गाँधी जी की जिद और उनके परिवार व निकट सहयोगियों के विरोध का यह दौर १९४६-१९४७ ई. के दौरान कई महीने चला। इस पर गाँधी जी से उनके पुत्र देवदास तथा सरदार पटेल, किशोरलाल, नरहरि आदि सहयोगियों ने गाँधी जी से आंशिक/पूर्ण सम्बन्ध-विच्छेद तक कर लिया था। जिन लोगों ने तीखा विरोध किया उन में ठक्कर बापा, बिनोबा भावे, घनश्याम दास बिड़ला आदि भी थे।

एक विश्लेषक लिखते हैं कि- 'गाँधी जी के साथ इन प्रयोगों में सम्मिलित महिलाओं में परस्पर जलन के प्रकरण इन प्रयोगों को नितान्त सांसारिक प्रमाणित करते हैं वहीं यह आश्चर्यजनक है कि इस सब में गाँधी जी भी कभी सहभागी बन जाते थे।' मनु की डायरी में बिरला हाऊस, दिल्ली, १८ जनवरी १९४७ की प्रविष्टि है- 'बापू ने कहा कि उन्होंने लम्बे समय बाद मेरी डायरी को पढ़ा और बहुत ही अच्छा महसूस किया। वे बोले कि मेरी परीक्षा खत्म हुई और उनके जीवन में मेरी जैसी जहीन लड़की कभी नहीं आई और यही वजह थी कि वे खुद को सिर्फ मेरी माँ कहते थे। बापू ने कहा- 'आभा या सुशीला, प्यारेलाल या कनु, मैं किसी की परवाह क्यों करूँ? वह लड़की (आभा) मुझे बेवकूफ बना रही है बल्कि सच यह है कि वह खुद को ठग रही है। इस महान् यज्ञ में मैं तुम्हारे अभूतपूर्व योगदान का हृदय से आदर करता हूँ।' यहाँ एक और आश्चर्य है कि इन दिनों जब गाँधी जी आभा की निन्दा कर रहे हैं, फिर भी वह पूर्ण आत्मीयता के साथ उनके साथ दिखायी देती है, इससे पता चलता है कि बात कुछ और थी गाँधी जी कह कुछ और रहे थे। श्रीरामपुर, बिहार, २८ दिसम्बर १९४६- 'सुशीलाबेन ने आज मुझसे पूछा कि मैं बापू के साथ क्यों सो रही थी और कहा कि मुझे इसके गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।'

इस प्रकार के अनेक विवरण मनु की डायरी में मिलते हैं। गाँधी जी के साथ प्रयोगों में सम्मिलित अनेक महिलाओं ने उच्च पदों का उपभोग किया परन्तु मनु ऐसी भाग्यशाली नहीं रही। वह जब गाँधी जी की सहभागी बनी नाबालिग ही थी। उसके कोमल मन पर अत्यन्त विपरीत प्रभाव पड़ा। इसी क्रम में मनु बेन के नाम से मशहूर मृदुला गाँधी ने ४० वर्ष की उम्र में अविवाहित रहते हुए दिल्ली में गुमनामी में दम तोड़ा।

वस्तुतः राहुल गाँधी ने अपने मूर्खतापूर्ण बयान से गाँधी जी के बारे में यह चिन्तन प्रस्तुत करने को विवश किया। स्थानाभाव के कारण उन अन्य अनेक महानुभावों की चर्चा करने से विरत रह रहे हैं जिनके चित्र भी प्रायः महिलाओं से घिरे हुए, पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते हैं।

- अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

कुछ लोग कहा करते हैं, धनाभाव न होता तो मैं अद्‌भुत कार्य कर दिखाता। अमेरिका में एक पत्रकार हजारों लोगों के जीवन का अध्ययन करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि लगभग ७० प्रतिशत चिन्ताएँ वित्तीय समस्याओं के कारण होती हैं। भारत जैसे गरीब देश में इस समस्या ने गम्भीर रूप धारण कर लिया है। आर्थिक संकट से ग्रस्त होने पर हम जीवन की समस्याओं का हल करने का साहस खो बैठते हैं। आत्मसंशय, उत्साह की कमी और थकावट हमारे मन को रौंद डालती हैं; ऊब, आलस्य तथा चिन्ता हमें सताती रहती है। सम्पत्ति की पूजा करने वाले किसी समाज में गरीबी एक बड़ा अभिशाप है।

मैं तुम्हें अपने एक मित्र के बारे में बताता हूँ। तीन सदस्यों वाले अपने छोटे परिवार के भरण-पोषण के लिए वह पर्याप्त धन कमाता है। वह एक सरकारी कर्मचारी है। उसे घर चलाने में ज्यादा खर्च नहीं करना पड़ता। पुराना कर्ज चुकाने के लिए वह कोई नया कर्ज लेता है। इस प्रकार यह दुश्चक्र चलता रहता है। फिर झूठ बोलना जरूरी हो जाता है। मित्रों के द्वारा उधार देने से मना करने पर मित्रता पर असर पड़ता है। कभी-कभी तो उसके लिए घर की दैनिक जरूरतें भी पूरी कर पाना कठिन हो जाता है। घर में किसी के बीमार पड़ जाने पर, अतिथियों के आ जाने पर स्थिति दुःखदायी हो जाती है। यद्यपि सारी गलती उसी की है, तो भी वह दूसरों

# आर्थिक समस्याएँ

तो क्या आर्थिक समस्याओं का कोई समाधान नहीं है? क्या हमें केवल निराश होकर हाथ-पर-हाथ रखे समस्या के बारे में सोचते रहना होगा?

यह सत्य है कि बात ही बात में तुम्हारी आर्थिक समस्याओं को हल कर सकने वाला कोई जादुई सूत्र हमारे पास नहीं है। परन्तु यदि हम ईमानदारी के साथ विचार और कार्य करें, तो उन्हें हल कर पाना कठिन नहीं होगा। सम्भवतः यह समस्या तुम्हारे या बड़े लोगों द्वारा संसाधनों के कुप्रबन्ध के कारण पैदा हुई हों। पर इसे हल करने का दायित्व तुम्हारा है। स्थिति से निपटने के लिए तुम्हें ईमानदारीपूर्वक प्रयास करना होगा।

को दोष और समाज को अभिशाप देते हुए कहता है, लोगों के उद्देश्य तथा कार्य पूरी तौर से स्वार्थपूर्ण हैं।'

ये सज्जन अच्छे और उदार हैं, पर थोड़े अपव्ययी हैं। वे उच्च जीवन स्तर से जीना पसन्द करते हैं। वे मित्रता को महत्व देते हैं अतः वे अच्छे लोगों की संगति ढूढ़ते रहते हैं। परन्तु बचत में उनका विश्वास नहीं है। वे कर्ज लेकर भी टेलीविजन, रेफ्रिजेटर, वाशिंग मशीन आदि खरीद लेते हैं।

ये सज्जन अपेक्षाकृत आसानी से आरामदेह जीवन बिता सकते थे। उनकी गलती केवल इतनी ही है कि वे बिना विचारे अपना धन ऐसी चीजों पर खर्च कर देते हैं, जो

उनकी हैसियत से परे है। इस कारण उन्हें कर्ज का आश्रय लेना पड़ता है। इस प्रकार कर्ज और निर्धनता का दुश्चक्र उन्हें पीड़ित किये रहता है।

अर्थव्यवस्था एक कठोर शासक है। वह किसी के प्रति दया अथवा सहानुभूति नहीं दिखाती। तुम चाहे जितना भी प्रयास करो, पर धन खर्च किए बिना रह नहीं सकते। परन्तु यदि तुम थोड़ा विचारपूर्वक और भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखकर चलो, तो तुम अपना धन इतनी तेजी से नहीं खर्च करोगे। तात्पर्य यह है कि भविष्य की जरूरतों पर थोड़ा ध्यान देना हमें अपव्यय करने से रोकता है।

वास्तविक समस्या धन के अभाव की नहीं है। महान् अर्थशास्त्रियों की खोज है कि धन का ठीक-ठीक उपयोग करना ही बड़ा महत्व रखता है। दूसरे शब्दों में हमें धन खर्च करने की कला सीख लेनी चाहिए। अनेक धनी लोग अपने आप की अपेक्षा काफी अधिक खर्च कर डालते हैं और इसके फलस्वरूप अपने लिए आर्थिक संकट पैदा कर लेते हैं और कुछ ऐसे लोग भी हैं जो अपनी सीमित आय को भी विवेकपूर्वक व्यय करके सुखी, संतुष्ट तथा ऋणमुक्त रहते हैं। इंग्लैण्ड में रहते समय गाँधीजी हर महीने ४५ पौण्ड खर्च किया करते थे। बाद में उन्होंने अपना खर्च केवल १५ पौण्ड तक सीमित कर लिया था।

बैंगलोर में निवास के दौरान गाँधीजी ने महादेव भाई से कहा था- 'देखो, कपड़े धुलवाने में काफी व्यय हो रहा है।' महादेव भाई ने कहा- 'मैं नित्य ४ बजे उठकर मध्यरात्रि तक कार्य करता रहता हूँ।' गाँधीजी ने कहा- 'तो फिर प्रातः साढ़े तीन बजे उठकर अपने कपड़े धो लिया करो।'

जब गाँधी जी यरवदा जेल में थे तब उन्हें सरकार से प्रतिमाह दो सौ रुपये का भत्ता मिला करता था। वे प्रतिमाह केवल ३५ रुपये खर्च करके बाकी राशि सरकार को लौटा देते थे। गाँधी जी ने तपोमय जीवन बिताया था। माना कि हम सबके लिए उस हद तक किफायती होना सम्भव नहीं है, लेकिन हम लोग भी कुछ हद तक तो अपना खर्च जरूर घटा सकते हैं। गाँधी जी ने अपने जीवन द्वारा हमारे सामने एक दृष्टान्त रखा था। थोड़ा बहुत ही सही, पर क्या हमें उस आदर्श को अपनाने का प्रयास नहीं करना चाहिए?

एक बार एक अंग्रेज ने कहा था, धन कमाना तो हर कोई जानता है, परन्तु लाखों में से कोई एक ही उसका सही व्यय करना जानता है। यह एक परस्पर विरोधी कथन लगता है, पर इसमें एक गहन सत्य छिपा है। यदि हम ईमानदारी से अपने दैनिक खर्च पर विचार करें, तो पता चलेगा कि हम कितना अनावश्यक खर्च कर डालते हैं।

हमारे एक मित्र कहा करते थे 'मुझे यह तो दिखता है कि रुपये कैसे सिक्कों में परिणत हो जाते हैं पर ये सिक्के कहाँ और कैसे गायब हो जाते हैं, इसका मुझे पता नहीं चलता।' बहुत समझा बुझाकर मैंने उनसे कम से कम महीने भर उनके दैनिक व्यय का लेखा-जोखा रखने को राजी किया। शीघ्र ही वे समझ गए कि बिना विचारे किए जाने वाले छोटे-मोटे खर्चों से ही उनके पैसे खत्म हो जाते हैं। सामान्यतः हम जिन खर्चों को महत्वहीन या नगण्य मानकर उपेक्षा करते हैं वस्तुतः वे ही अज्ञात रूप से हमारे बजट को असन्तुलित कर देते हैं।

नित्य डायरी लिखना बहुत लाभकारी है। इससे हमें अपनी वित्तीय समस्याओं का कारण ढूंढ़ने में मदद मिलती है। अपनी आय के आधार पर सामान्य बजट बनाकर हम उसी के आधार पर खर्च करने की आदत डाल सकते हैं।

सर्वप्रथम तो जीवन की मूलभूत जरूरतों पर ध्यान देना होगा। रेडियो या टेलीविजन खरीदने की अपेक्षा स्नानागार की टूटी दीवार की मरम्मत करना अधिक जरूरी है। विलासिता को प्राथमिकता नहीं दी सकती और न ही अपनी भावनात्मक जरूरतों की पूर्ति के लिए चीजें खरीदनी चाहिए। खर्च के पूर्व अपने से यह पूछने में अधिक बुद्धिमानी है कि क्या यह चीज सचमुच जरूरी है? परिवारों को अपनी आय के भीतर ही गुजारा करने की शिक्षा दी जानी चाहिए। आपात स्थिति से निपटने के लिए हम बैंक में रखी अपनी बचत की मदद ले सकते हैं। बीमारी दुर्घटना जैसी अप्रत्याशित या अपरिहार्य घटनाओं के लिए भी हमारे पास सुरक्षा व्यवस्था या बीमा हो। लॉटरी, जुआ आदि धनार्जन के सरल उपाय लग सकते हैं, पर अन्ततः वे हमें बर्बाद कर डालते हैं।

एक विख्यात बैंकर और अर्थशास्त्री एक बार युवा विद्यार्थियों की एक टोली को अधिक सफलता के रहस्य बता रहे थे-

१. कभी अपनी कमाई से अधिक खर्च मत करो।

२. यदि तुम्हारे ऊपर ऋण है, तो पहले उसे चुकाओ।
३. कर्ज से दूर रहो। उधार में कुछ मत खरीदो। कुछ विक्रेता प्रलोभन देते हुए कहते हैं, अपनी इच्छानुसार जो चीज चाहिए ले जाइये, पैसे बाद में दे दीजिएगा। ऐसे लोगों की चाल में मत फंसो।
४. नितान्त आवश्यक चीजों के लिए ही धन का व्यय करके खर्च घटाओ। कुछ भी खरीदने से पूर्व यह विचार कर लो कि क्या इसके बिना तुम्हारा काम चल सकता है या क्या तुम उनसे सस्ती चीज से अपना काम चला सकते हो।
५. जितना भी हो सके, बचत करो; और उसे बुद्धिमता के साथ तथा ठीक ढंग से निवेश करने की कला सीखो।

तुम कह सकते हो कि ये बातें तो सबको ज्ञात हैं, फिर इन्हें बताने की क्या जरूरत है? परन्तु केवल जान लेना ही पर्याप्त नहीं है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात है कि तुम अपने जीवन में इनका कितना अभ्यास करने में समर्थ हो और तुमने इसे कार्य रूप में परिणत करने का कितना प्रयास किया है। अच्छे अर्थ प्रबन्धन के इन पाँच मूलभूत सिद्धान्तों के अभ्यास का प्रयास करो। एक वर्ष तक इन पाँच सिद्धान्तों पर चलने का प्रयास करने पर तुम्हें मेरी बातों की सत्यता समझ में आ जाएगी। इससे तुम्हारी अर्थव्यवस्था निश्चित ही सुधरेगी। बेकन कहते हैं- 'धन एक अच्छा सेवक, पर बुरा मालिक है। धन के सेवक न बनकर, उसी को अपना सेवक बनाओ।'

लेखक- स्वामी जगदात्मानन्द
(साभार- जीने की कला)

**पूज्य स्वामी आर्यवेश जी एवं श्री वाचोनिधि आर्य का अनुकरणीय उदाहरण**

इन दिनों सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर में नवीन प्रकल्पों का निर्माण किया जा रहा है। जिनके माध्यम से कुल 1 घंटे के शो में, आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, 3डी थियेटर तथा सोलह संस्कारों के लाइफसाइज डायरोनोमा द्वारा वैदिक संस्कृति तथा ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों को प्रभावशाली तरीके से लाखों दर्शकों तथा विद्यार्थियों के समक्ष जीवन्त किया जाएगा। इस हेतु आर्यजनों द्वारा अथवा भारतीय संस्कृति के प्रशंसकों द्वारा अपना सात्विक दान न्यास को दिया जाए, यह अपेक्षित है।

इन प्रकल्पों के बारे में जानकारी प्राप्त होने पर तपोमूर्ति, हमारे प्रति अतिशय आत्मीयता रखने वाले पूज्य स्वामी आर्यवेश जी ने एक लाख रुपये के साथ अपना आशीर्वाद सम्प्रेषित किया है। एक संन्यासी का अर्थ–दान निश्चित ही असाधारण श्रेणी की आहुति है। पूज्य स्वामी जी को प्रणाम।

आर्य जगत् के ही विशिष्ट व्यक्तित्व श्री वाचोनिधि आर्य ने आर्य समाज गाँधीधाम की ओर से रु.51000 की राशि न्यास को प्रदान की है। भाई वाचोनिधि जी और आर्य समाज गाँधीधाम को कोटिशः आभार सहित अन्य आर्य बन्धुओं से भी प्रार्थना है कि वे अपनी उदारता को प्रदर्शित कर ऋषिवर की कर्मस्थली को अपने योगदान से प्रगति पथ पर बढ़ाने में सहायक बनें।

–अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

**आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार**

**"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार** ₹ 5100

**कौन बनेगा विजेता**

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

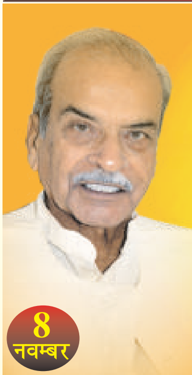

8 नवम्बर

**आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध नेता, कर्मयोगी, इस न्यास के न्यासी श्री आनन्द कुमार जी आर्य को उनके जन्मदिवस के शुभ अवसर पर शतशः शुभकामनाएँ।**

# स्वामी दयानन्द के आने की जरूरत

११वीं सदी के मध्य में जिस तरह यहाँ पर पाश्चात्य सभ्यता ने अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश की थी, यदि वही रविश २०वीं सदी में भी कायम रहती तो आज काशी, प्रयाग, अयोध्या और मथुरा की पुरानी सभ्यताओं पर फिदा होने वालों या राम, कृष्ण के नामलेवाओं की शुमार करने वाले लोगों को, उनकी शुमार करने में बहुत आसानी होती। लेकिन 'मेरे मन कुछ और है, विधना के कुछ और' इस लोकोक्ति के अनुसार पाश्चात्य सभ्यता को अपना प्रभुत्व जमाने का काफी मौका हाथ न आया और न वह यहाँ के लोगों को अपना शैदाई ही बना सकी।

**श्री पीर मोहम्मद मूनिस गणेश शंकर विद्यार्थी के पत्र 'प्रताप' के संवाददाता थे। तथा गाँधी जी को चम्पारण बुलाकर उस आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार करने में शुक्ल जी के प्रमुख सहयोगी थे।**

यह प्रत्यक्ष है कि- 'जिस जाति ने, किसी समय महान् महात्माओं को उत्पन्न किया है, तो उस जाति में वह शक्ति विद्यमान है कि अनुकूल समय मिलने पर फिर अपने में से महान् महात्माओं को उत्पन्न कर सके।' इसी सत्य सिद्धान्त के अनुसार भारत की रत्नगर्भा, वीर प्रसविनी भूमि ने अपने गर्भ से वह अमूल्य रज, अद्वितीय विद्वान्, निर्भीक चेला, अटल ब्रह्मचारी और सच्चा देशभक्त स्वामी दयानन्द उत्पन्न किया। जिसके अस्तित्व पर हिन्दू जाति ही नहीं बल्कि भारत की सभी जातियाँ जितना अभिमान करें थोड़ा है।

स्वामी दयानन्द ने भारतवर्ष को बहुत बुरी अवस्था में पाया। हिन्दू जाति अपनी पुरानी सभ्यता और मर्यादा को मिटा देने के लिए उधार खाये बैठी थी। मगरिब की दिलफरेब सभ्यता को कुछ लोगों ने अपना लिया था और कुछ लोग अपनाने की उधेड़बुन में लगे हुए थे। आर्य सभ्यता झूठे ढकोसलों और दिखाऊ व्यवहारों में ऐसे छिपी हुई थी कि ढूँढ़ने से जल्दी पता लगाना टेढ़ी खीर था। बहुत से हिन्दू लोग अपने को ऋषि सन्तान कहने में हिचकते थे और मुकद्दस वेद की हस्ती को यूरोपीय विद्वानों के सर्टिफिकेट द्वारा तसव्वर करते थे। मगरिबी रंगोरोगन उन लोगों के चेहरों पर अपना बदनुमा नकाब डाल चुका था लेकिन एक महर्षि दयानन्द ने अपने विद्याबल, कर्मबल और तपोबल से सारी कमजोरियों, अकर्मण्यता और बुराइयों को दूर कर दिया और हिन्दुओं को सच्चा हिन्दू आर्य सन्तान और वतन का हामी और अनुयायी बनाया। वैदिक धर्म का झण्डा उठाया और सत्य सनातन धर्म का प्रचार करना शुरू किया। गुमराहों को राहेरास्ता पर लाया। बिछुडे हुओं को गले लगाया और उन लोगों को सार्वभौम बन्धुत्व का पाठ पढ़ाया। एक बार फिर कपिल, कणाद, जैमिनि, पतंजलि, गौतम और व्यास के नामों की शंखध्वनि से आर्यावर्त्त गूंज उठा और चारों ओर वेद की ऋचायें सुनाई पड़ने लगीं। कुछ लोगों ने इस ब्रह्मचारी के विद्याबल और तेजोबल के सामने अपना

सिर झुकाना कबूल न किया और मुखालफत करने का मंसूबा बाँधा लेकिन उनकी मुखालफत की दलील इस विद्याबल के सामने टिक न सकी।

स्वामी दयानन्द जी ने हिन्दू समाज को उस पुरानी सभ्यता और रीति-रिवाज पर चलाने की कोशिश की, जिस सभ्यता को आर्य ऋषियों ने बहुत समय पहिले भारतवर्ष में कायम किया था। वैदिक धर्म का पुनरुत्थान किया और हिन्दुस्थानियों को सच्चा हिन्दुस्तानी और राष्ट्रीय भाव की जागृति का उत्साह दिलाया। धार्मिक और सामाजिक उन्नति करने के लिए अपने अनुयायियों को मैदान में उतारा और स्वयं मैदान में आकर अपने विरोधियों को ललकारा। लेकिन अन्त में वहीं हुआ जिसकी गवाही संसार का इतिहास देने को तैयार है। सत्य का विजय हुआ वैदिक धर्म का फिर डंका बजा और भारतीयता को गौरव प्राप्त हुआ।

देशकाल के अनुसार स्वामी दयानन्द जी ने धार्मिक और सामाजिक उन्नति के साथ-साथ राजनैतिक उन्नति की ओर आर्य सन्तानों का ध्यान आकर्षित किया और राष्ट्र निर्माण करने का प्रयत्न सोचा। आर्य सन्तानों के लिए विदेशी शासन को मजिर और खतरनाक बतलाया और उनको संगठित करने के लिए भारत में आर्य समाज की नींव डाली। कुछ लोग इस समाज को देखकर चौकन्ने हुए लेकिन इस चौकन्ने होने से दो लाभ हुए। भारतीयों की आँखें खुलीं और अपनी दशा को देखकर बेदार हुए और उठे। मेरे मुसलमान भाई इस बात को मानने से कतई इन्कार करेंगे और स्वामी दयानन्द जी की पाक हस्ती के उस प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष एहसानात से अपने को बरी होने की कोशिश करेंगे। लेकिन सच तो यह है कि अगर स्वामी दयानन्द जी १९वीं सदी में न होते तो यकीनन हिन्दुस्थानियों पर मगरबी तहजीब और तर्जेमुआशरत मगरिबी ख्यालात, मगरिबी नोंक-झोंक

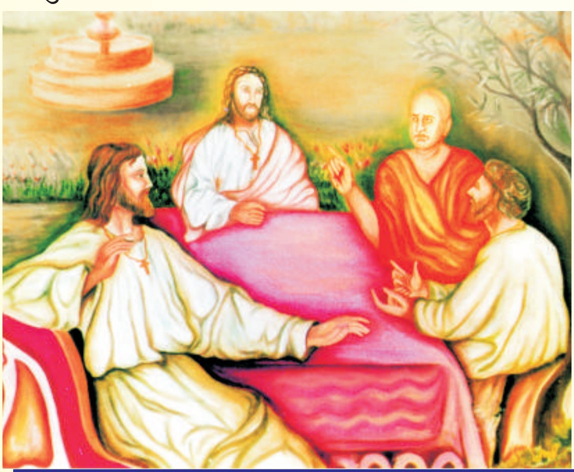

हाव-भाव और उस बुरे आदत ने जो अपना गहरा तालुकात पैदा कर लिया था और कुछ ही दिनों में यहाँ के पुराने मजहबी जजबात पर अपना असर डालते और उसे मिटा डालने की कोशिश करते। ईसाइयत और मगरिबी तहजीब के मुख्य पुरख्तर हमले से हिन्दुस्थानियों को सावधान करने का सेहरा अगर किसी व्यक्ति के सिर पर बाँधने का सौभाग्य प्राप्त हो तो स्वामी दयानन्द की ओर इशारा किया जा सकता है।

यह बखूबी रौशन है कि पड़ोसी का असर पड़ोसी पर पड़ता है। अगर हिन्दू मगरिबी तहजीब की प्रचलित बुराइयों में फंसे हुए थे तो मुसलमान उससे पाक साफ न थे। दोनों अपने ख्यालात और सुभीते के अनुसार मगरिब की दिल फरेब तहजीब के दिलदाद हो रहे थे और मुमकिन था कि कुछ ही दिनों में हजरत मसीह के तकलीद की पैरवी करने पर आमादा हो जाते। आँधी चल रही थी, वृक्ष डोल रहे थे, आकाश में गर्दोगुब्बारा छा गया था। ऐसे विकट समय में नियम के अनुसार एक उपदेशक का प्रादुर्भाव हुआ उसने हवा के रुख को बदला। लोगों को अन्ध बुझक्कड़ों से बचाया और अपने उपदेशों से चारों ओर प्रकाश फैलाया।

जिस प्रकार हिन्दुओं के सिर पर मगरिबी तहजीब, अखलाक ओर तमद्दुनकी अब्रोहमत अपनी साया किए हुई थी, ठीक उसी तरह मुसलानों के सिर पर अपनी साया करने में उसने किसी तरह कोताही नहीं की। जिस प्रकार हिन्दू नास्तिकता के अन्धेरेगार में गिरे जा रहे थे, उसी प्रकार मुसलमानों ने अपने हमवतन भाइयों का साथ देना कबूल किया था। किसी न किसी तरह मगरिब की बुराइयों के शिकार दोनों कौमें हो चुकी थीं। ऐसे वक्त में उन मगरिबी तहजीब की बुराइयों से बचाने वाला, हिन्दुस्थानियों की आँखों की पट्टी खोलने वाला अगर कोई था तो बिला मोबालगह मानना लाजिम होगा कि इनमें स्वामी दयानन्द की जाति थी और उनका मिशन भी था जिन्होंने हिन्दुस्तानियों की आँखों के सामने से मगरिब की दामोफरेब का पर्दा उठा दिया और उनकी असली सूरत दिखला दी। लोगों को बतालाया कि मगरिब की हाव-भाव हिन्दुस्तानियों के लिए असवावे बुराई है। हिन्दू चेते और राहेरास्त पर आये। कोई वजह नहीं थी कि हिन्दू भाइयों की देखा-देखी मुसलमान न सम्भलें क्योंकि पड़ोसी की देखा देखी पड़ोसी बेदार होता है। इसी सिद्धान्त के अनुसार मुसलमानों ने हिन्दू भाइयों की देखा-देखी मगरिब की दिल फरेब तहजीब की बुराइयों की ओर से अपने को खींचा।

सच्चे मुसलमान कुछ-कुछ वतनपरस्ती का राग अलापने लगे। अगर १९वीं सदी में स्वामी दयानन्द जी न होते तो

मगरिबी तहजीब की बुराइयों से हिन्दुस्तानियों की आँखे न खुलतीं और न आज के दिन मजहब और देश का राग अलापने की नोबत आती।

१९वीं सदी में स्वामी दयानन्द ने भारत के लिए जो अमूल्य काम किया है उससे हिन्दू जाति के साथ-साथ मुसलमानों तथा दूसरे धर्मावलम्बियों को भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बहुत लाभ पहुँचा है।

अगर राजनैतिक दृष्टि से विचार किया जाय तो भी निःसंकोच मानना पड़ेगा कि भारत की वर्तमान राष्ट्रीय जागृति में स्वामी दयानन्द जी और उनके उपदेशों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बहुत कुछ प्रभाव हिन्दू जनता पर पड़ा है। एक प्रकार से यह कहना अनुचित न होगा कि १९वीं सदी के भारतीय राष्ट्र निर्माण कर्त्ताओं में स्वामी जी की शुमार सबसे पहले नहीं, तो किसी कदर पीछे भी नहीं हो सकती है। लाला लाजपतराय, लाला हरदयाल, श्याम जी कृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द आदि उसी गुलशन के खुशगवार और सरसब्ज पौधे हैं, जिनको स्वामी दयानन्द जैसे चतुर माली ने अपने उपदेश जल से सींच-सांच कर इतना बड़ा बनाया है। जिनकी सायों के नीचे बैठने के लिए हर शख्स को रश्क होता है। भारत के राष्ट्र निर्माण में स्वामी दयानन्द के मिशन ने बहुत कुछ आगे बढ़कर काम किया है। आर्य समाज को भारतीय उत्थान का बहुत बड़ा श्रेय और गौरव प्राप्त हो सकता है, और इस समाज को राष्ट्र निर्माण का एक प्रधान स्तम्भ करार देना सर्वथा उचित प्रतीत होता है। अछूतोद्धार के प्रश्न को राष्ट्रीय महासभा ने हल करने की अब अमली कोशिश की है, लेकिन स्वामी दयानन्द जी ने इस मुहलिक मरज के हमले से बचाने के लिए पहिले ही से अमली कोशिश कर रखी थी और बहुत कुछ सफलता भी हुई। अतएव इन सब बातों पर ध्यान देने से निःसंकोच मानना पड़ता है कि भारतीय राष्ट्रीय निर्माण में स्वामी दयानन्द और उनके मिशन का एक खास भाग है।

ऊपर की सारी बातों पर ध्यान देने से और निष्पक्षपात होकर विचारने से मालूम होता है कि स्वामी दयानन्द जी ने भारतवर्ष की भलाई और राष्ट्रीय जागृति के लिए जो कुछ किया, वह केवल किसी समाज विशेष के लिए नहीं और न किसी जाति विशेष का हित सोच कर किया, बल्कि वह भारतवर्ष के लोगों को उस सत्ययुग के आदर्श को सामने रखकर उसी के पथ पर भारतीयों को चलाने के लिए उठाने आया था।

साभार- दिव्य-दयानन्द
- श्री पीरमुहम्मद मूनिस

पूरा नाम-
चलभाष-

## सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०९/२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। ( एकादश समुल्लास पर आधारित )- पुरस्कार प्राप्त करिये

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ चा | १ | ■ | २ | २ त | २ | ३ | ३ | ३ ण्ड |
| ४ | ४ ग्ने | ४ | ४ स्त्र | ■ | ५ वा | ५ | ५ णा | ५ | ■ |
| ■ | ६ | ६ ग | ६ | ६ श | ■ | ७ | ७ र्या | ७ | ७ र्त्त |

**संकेत ( बाएँ से दाएँ ) ऊपर से नीचे न भरें।**

१. मंत्र नाम है ....... का?
२. तोप को संस्कृत भाषा में क्या कहते हैं?
३. जिस देश में कोई वृक्ष बड़ा नहीं होता, उस देश में किस वृक्ष को बड़ा मान लेते हैं?
४. जो अग्नि के लगाने से वायु में धुँआ फैलने और सूर्य की किरण वा वायु के स्पर्श होने से अग्नि जल उठे, उस शस्त्र का क्या नाम है ?
५. वायु के स्पर्श होते ही बद्दल होके झट वर्षने लग जाय उस शस्त्र का क्या नाम है?
६. शत्रु पर छोड़ने से उसके अंगों को जकड़ के बाँध लेता है, उस शस्त्र का क्या नाम है?
७. जितना विद्या और मत भूगोल में फैले हैं, वे सब किस देश से प्रचरित हुए हैं?

**''विस्तृत नियम पृष्ठ १४ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''**
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ दिसम्बर २०२२

**संस्कृति** इस शब्द का आज जितनी बहुलता के साथ प्रयोग हो रहा है उससे भी कई गुना अधिक इसका दुरुपयोग हो रहा है। हमारे अपने देश में ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर आज जो धमाचौकड़ी मची हुई है, कामुकता का जो नंगा नाच हो रहा है उसे देखकर किस सहृदय व्यक्ति की आत्मा नहीं रूठेगी? सच तो यह है कि हम 'संस्कृति' शब्द का सही अर्थ उसका प्रयोग और उपयोग ही भूल बैठे हैं और इस भूल की जड़ इस बात में है कि संस्कृति और सभ्यता को हम प्रायः एक-दूसरे का पर्याय ही मान बैठे हैं जबकि वे सर्वथा भिन्न भिन्न तत्व हैं।

'संस्कृति' विश्व जीवन की आत्मा है और सभ्यता उसका शरीर। संस्कृति के अन्तर्गत वे स्वस्थ परम्पराएँ एवं मान्यताएँ जाएगा। उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संसार सभ्यता की दौड़ में आज भले ही आगे हो परन्तु सांस्कृतिक चेतना की दृष्टि से वह एकदम पिछड़ गया है। बहुत पीछे न जाकर यदि हम ४०-५० साल पुराने अपने देश की स्थिति पर ही विचार करें तो हमें साफ-साफ दीख पड़ेगा कि उस समय चाहे हम इतने सभ्य न रहे हों पर सुसंस्कृत आज से निश्चय ही अधिक थे। उक्त विवेचन से यह भी स्पष्ट है कि देश काल के अनुरूप सभ्यता भिन्न-भिन्न होती हैं व अनेक होती हैं और बदलती भी रहती हैं। किन्तु संस्कृति की धारा अविच्छिन्न रूप और एक है। समस्त भेदों से ऊँचा उठकर संसार के समस्त मानवों की संस्कृति एक है। हम उसे विश्व संस्कृति या मानव संस्कृति कुछ भी कह सकते हैं।

तथा वे आचार और व्यवहार आते हैं जो मनुष्य की आत्मा को सुसंस्कृत कर सकें और इंसान को सच्चा इंसान बना सकें। संस्कृति मानव मात्र को एक ही सामान्य लक्ष्य की ओर उन्मुख करती है। वह मानव को मानवता का सच्चा मूल्यांकन सिखाती है और पराई पीर को अनुभव करने तथा उसे दूर करने के लिए खुद को मिटाना सिखाती है।

सभ्यता बाहर की चीज है। सब प्रकार की भौतिक उन्नति शिष्टाचार और रहन-सहन इसके अन्तर्गत आते हैं। एक व्यक्ति सुसंस्कृत है किन्तु सभ्य नहीं तो इससे संसार का कोई अकल्याण होने वाला नहीं है पर यदि वह सभ्य तो है किन्तु सुसंस्कृत नहीं तो समाज और संसार को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर देगा। और यदि वह सुसंस्कृत भी है और सभ्य भी है तो इसे सोने में सुगन्ध वाली स्थिति कहा

धर्म व अध्यात्म संस्कृति का प्राण है और **'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्'** के अनुसार धर्म का मूल वेद है इसलिए मानव संस्कृति सचमुच में वैदिक संस्कृति है। वेदमाता ने 'सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा' के द्वारा इसी सच्चाई का निर्देश किया है। और क्योंकि धर्म, अध्यात्म अथवा संस्कृति का केन्द्र मुख्यतया भारतवर्ष रहा है अतः हम उसे भारतीय संस्कृति भी कह देते हैं। यद्यपि संस्कृति का यह वर्गीकरण उचित नहीं माना जा सकता। शताब्दियों और सहस्राब्दियों तक विश्व मानव वैदिक संस्कृति के पावन आलोक में सुख और शान्ति का धर्ममय जीवन बिताता रहा, परन्तु जैसा कि हम जानते हैं कालचक्र की लपेट में सब कुछ उलट गया। अधर्म को धर्म की संज्ञा दी गई, असत्य को सत्य के रूप में ढोल बजाकर विज्ञापित किया गया और हम देख रहे हैं कि आज विकृति

को संस्कृति कहा जा रहा है। महोपकारक ऋषि दयानन्द ने जब नवक्रान्ति का शंखनाद किया और उन्होंने भूली हुई उसी देन को फिर से संसार के सामने प्रस्तुत किया तो स्वभावतः उसके साथ ही भूली हुई वैदिक संस्कृति का सच्चा स्वरूप भी उन्होंने हमें बताया। हम यहाँ उसी महान् संस्कृति के तीन प्रमुख प्रतीक ओमूकार, आर्य और नमस्ते का संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत करने लगे हैं।

अध्यात्मवाद संस्कृति का प्राण है और अध्यात्म का केन्द्र बिन्दु स्वयं ओंकार है। ओंकार की उपासना ही हमारी सांस्कृतिक चेतना अर्थात् मानवता को जगाती है। ओंकार उपासना या आस्तिकता मानव संस्कृति या वैदिक संस्कृति का प्रथम महान् प्रतीक है। ईश्वर एक है अनेक नहीं, ईश्वर का मुख्य नाम ओम् है और एकमात्र ओंकार उपासना ही करणीय कर्तव्य है, यह जानने के पश्चात् यह समझना आवश्यक है कि संसार के हम सभी मानव उस एक ही पिता के पुत्र होने से समान और भाई-भाई हैं। आर्य ईश्वर पुत्र है, के सन्देश के द्वारा वेदमाता ने यही सन्देश दिया है संसार के सभी श्रेष्ठ मानव आर्य हैं। वर्गवाद से सहमी हुई धरती को जाति और पन्थों से ऊँचा उठकर वैदिक संस्कृति के दूसरे महान् प्रतीक 'आर्य' को समझने की आज कितनी आवश्यकता है। पर इससे पहले कि संसार इस ओर झुके स्वयं हमें हमारे दुर्भाग्य और दास्तां के प्रतीक हिन्दू शब्द से पीछा छुड़ा कर अपने को 'आर्य' कहने और कहलाने में गौरव अनुभव करना होगा। फिर वह दिन भी दूर नहीं रहेगा जब हम **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का मधुर सपना साकार देख सकेंगे।

संसार के विभिन्न और अनेक अभिवादन विश्व मानव की सांस्कृतिक चेतना की प्रसूतावस्था और भेद-विभेद के द्योतक हैं। ये विभिन्न अभिवादन प्रायः तो मत और पन्थों के आधार पर हैं तथा कुछ एक एकदम निरर्थक और निःसार हैं। वैदिक संस्कृति का तीसरा प्रतीक नमस्ते का अभिवादन है। नमस्ते जहाँ मत, पन्थ, जाति, सम्प्रदाय और किसी देश विशेष के किसी पुरुष विशेष के नाम पर न होकर इन सबसे ऊपर उठा हुआ है वहाँ यह अत्यधिक कर्णप्रिय संक्षिप्त सार्थक और सुष्ठु भी है। परन्तु इसके पहले कि नमस्ते पुराने समय की भाँति फिर सारे संसार को एकता के सूत्र में बाँध सके, वह सम्पूर्ण भारत का एकमात्र अभिवादन बन सके यह आवश्यक है।

वैदिक संस्कृति का सन्देशवाहक भारत स्वयं आज के विविध मिथ्या प्रतीकों को त्याग कर अपने गौरवशाली अतीत के उज्ज्वल पृष्ठों में अंकित इन महान् पंक्तियों की गौरवमयी गाथा को पढ़कर, समझ कर और उसके अनुसार आचरण करके समर्थ वाणी में आज के दिन संसार का मार्गदर्शन कर सके।

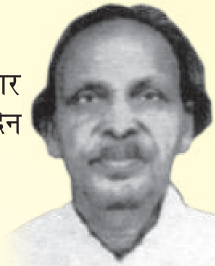

भगवान हमें शक्ति भक्ति दें कि हमारा देश संस्कृति के नाम पर मिथ्या प्रतीकों से पीछा छुड़ाकर इस दिशा में अपने कर्तव्य का पालन कर सके। आओ हम सब एक बार प्रेम और श्रद्धा से कहें-

**ओम् हमारा देव है और आर्य हमारा नाम।**
**वेद हमारा धर्म है सत्य हमारा काम।।**

- आचार्य प्रेमभिक्षु
(साभार- तपोभूमि मई-१९६०)

### राजस्थान सरकार का यू-टर्न

राजस्थान की गहलोत सरकार ने बाल विवाह रजिस्ट्रेशन बिल पर हाल में किए संशोधन पर यूटर्न ले लिया है। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा है कि विधानसभा में हाल ही पारित 'राजस्थान अनिवार्य विवाह पंजीकरण (संशोधन) विधेयक २०२१' पर पुनर्विचार के लिए वह राज्यपाल से उसे वापस भेजने का अनुरोध करेंगे। उन्होंने कहा कि इस विधेयक को अध्ययन के लिए कानूनविदों को दिया जाएगा और उनकी सलाह के आधार पर इसे आगे बढ़ाने या नहीं बढ़ाने का फैसला किया जाएगा।

१७ सितम्बर को राजस्थान विधानसभा में शादियों का अनिवार्य रजिस्ट्रीकरण संशोधन बिल को पारित किया गया था। इसमें बाल विवाह के रजिस्ट्रेशन का भी प्रावधान है। बीजेपी ने इसके खिलाफ विधानसभा से वॉकआउट किया था। राज्यपाल कलराज मिश्र ने भी इसको मंजूरी नहीं दी है और पिछले सप्ताह से ही रोक रखा है, वहीं

इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में भी याचिका दायर की जा चुकी है। ध्यातव्य है कि आर्य समाज ने भी इस प्रतिगामी बिल का जमकर विरोध किया था आर्य संदेश टीवी पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार तथा श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने अनेक प्रमाणों को प्रस्तुत करते हुए इस बिल को वापस लेने की आवश्यकता को निरूपित किया था।

# पर नारी की सेज पर..........

कहावत मशहूर है कि मनुष्य का सत्यानाश जर, जोरू और जमीन की वजह से होता है! अंग्रेजी में कहते हैं कि wine wealth and women are the root cause of any trouble for man. परमात्मा ने इस संसार चक्र को चलाने के लिए पुरुष तथा स्त्री दोनों बनाए हैं। हमारे समाज ने अनुशासन, गरिमा, मर्यादा तथा नैतिकता के आधार पर पुरुष तथा स्त्री में विवाह रूपी सामाजिक गठबंधन में बंध कर किसी अन्य तीसरे को दखलअंदाजी के बिना परिवार में वृद्धि की बात कही है। हमारे शास्त्र ऐसे उदाहरणों से भरे पड़े हैं जो हमें शिक्षा देते हैं कि ..... पर स्त्री की सेज पर सपने में भी ना ज ई ओ.... अगर स्त्री उम्र में बड़ी है तो वह माता समान है, अगर बराबर की उम्र की है तो वह बहन समान है और अगर उम्र में छोटी है तो वह बेटी समान है। ऐसी शिक्षा हमारे पुराने धार्मिक ग्रन्थों के अलावा ऋषि, मुनि, तपस्वी, सन्त, महन्त तथा धार्मिक गुरु भी देते रहे हैं। हमारी संस्कृति ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विवाह ना कराने अर्थात् कामवासना से परे रहने की भी सलाह देती है तदनुसार भारतीय इतिहास में बहुत सारे ब्रह्मचारी लोगों के बारे में पढ़ने को मिलता है। उन्होंने अपना सारा जीवन समाज सुधार अथवा धर्म में लगा दिया। लेकिन इन सबके बावजूद भी स्त्री पुरुष की कमजोरी तथा आकर्षण का कारण बनी रही है। किसी भी व्यक्ति को अपनी पत्नी चाहे वह कितनी भी सुन्दर, गुणवती, सुशील, आज्ञाकारी, समर्पित भावना वाली, त्याग करने वाली, सहनशील तथा कर्तव्यनिष्ठ क्यों ना हो इसके बावजूद भी पुरुष कामवासना के जाल में फस कर पर नारी की तरफ झुक ही जाता है। जब कामदेव पुरुष पर हावी हो जाता है तब पुरुष की बुद्धि इतनी भ्रष्ट हो जाती है कि वह सब कुछ भूलकर तथा अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरी स्त्री का दास बन जाता है चाहे वह कैसी भी क्यों ना हो। पुरुषों द्वारा घरबार की जरूरतों को तिलांजलि देकर वेश्याओं के पास जाकर धन बर्बाद करने तथा हँसते खेलते परिवार को उजाड़ने की बातें बहुत बार सुनी जाती हैं। जब पुरुष अपनी पत्नी को छोड़कर पर नारी का गुलाम बन जाता है तो वह औरत उसका हर तरह का नाजायज फायदा उठाती है। इस बात की क्या गारण्टी है कि उस 'पर नारी' की किसी और में दिलचस्पी नहीं होगी और वह दोनों को ही बेवकूफ बना रही हो। पर नारी के पास जाने वाले व्यक्ति का धन दौलत, घर परिवार तथा इज्जत तो बर्बाद हो ही जाते हैं लेकिन साथ में उसे एड्स तथा गोनोरिया जैसे घातक रोग भी लग जाते हैं। दो नावों पर सवार होने वाले ऐसे व्यक्ति का मानसिक संतुलन भी बना नहीं रह सकता। पहले समय में तो पुरुष कामवासना की तृप्ति के लिए

वेश्याओं के कोठे पर जाया करता था। यहाँ पर.. रमा तथा रम... दोनों ही उसका मनोरंजन किया करते थे लेकिन आजकल तो कोठों के बदले में पुरुष द्वारा 'पर नारी' को बड़े-बड़े होटलों, ऐश्वर्यपूर्ण मकानों तथा फार्म हाउस पर रखकर आनन्द से समय बिताया जाता है। पर नारी का सहवास करने के लिए लोग नए-नए तरीके अपनाते रहते हैं। 'लिव इन रिलेशन' के तहत तो आजकल विवाहित पुरुष भी किसी अन्य स्त्री के साथ जब तक दोनों की सहमति हो और ठीक-ठाक चलता रहे, इकट्ठे रह सकते हैं और जब दोनों का एक दूसरे से मन ऊब जाए तो अपना-अपना रास्ता नाप सकते हैं। पहले समय में पुरुष अपनी पत्नी के अलावा अन्य स्थानों पर रखैल रखा करते थे जिसके कारण उनकी अपनी पारिवारिक सुख शान्ति पर बुरा असर पड़ता था। आजकल जो 'लिव इन रिलेशन' की प्रवृत्ति चल पड़ी है, इसे मैं एक विशेष प्रकार की वेश्यावृत्ति ही कहूँगा जो कि परिवारिक जीवन को दीमक की तरह खा जाती है। कामवासना के गुलाम पुरुष अपने साथ काम करने वाली या जान पहचान की स्त्रियों को विवाह का लालच देकर उनके साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाते हैं जिससे पति-पत्नी में तलाक तक की नौबत आ जाती है। पुरुष जब दूसरी स्त्री से कामवासना के तहत शारीरिक सम्बन्ध बनाता है तो वह होने वाली बदनामी, परिवारिक जीवन, अपनी सुशील स्त्री तथा छोटे-छोटे बच्चों के भविष्य की भी परवाह नहीं करता है।

ऐसे में कहाँ है नैतिकता? इतिहास गवाह है कि 'पर नारी' के सहवास से पुरुष का कैसे-कैसे सत्यानाश हुआ। इन्द्र देवता के पास एक से बढ़कर एक सुन्दर अप्सरा थीं फिर भी वह गौतम ऋषि की सुन्दर पत्नी अहिल्या के साथ रूप बदलकर सहवास करने चला गया और भेद खुलने पर शापित हुआ। रावण चारों वेदों को जानने वाला, शिव भक्त तथा मौत को जीतने वाला पराक्रमी राजा था परन्तु 'पर नारी'... श्री

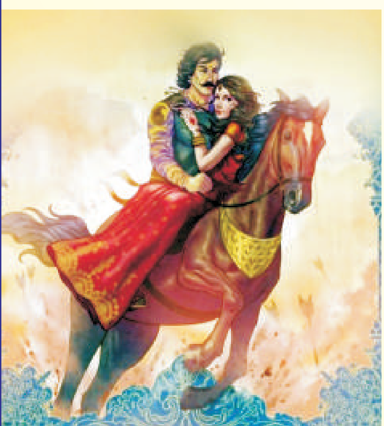

रामचन्द्र जी की पत्नी, सीता के अपरहण के कारण यमलोक को चला गया और उसका सर्वनाश हो गया। जब वह मरा तो उसका दिया बाती करने वाला भी कोई नहीं था!

मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान की सुन्दर पत्नी, संयोगिता को प्राप्त करने के लिए उसके राज्य पर १४ बार हमला किया! १३ बार तो वह हार गया और पृथ्वीराज ने उसको जाने दिया परन्तु १४वीं बार पृथ्वीराज चौहान हार गया और मोहम्मद गौरी ने उसकी आँखें निकाल दीं परन्तु पृथ्वीराज चौहान ने अंधा होने के बावजूद मोहम्मद गौरी को तीर चला कर मौत के घाट उतार दिया। इसलिए जहाँ तक हो सके 'पर नारी' के सम्पर्क से बचना चाहिए। जब एक बार किसी महिला के साथ अपनी इच्छा से विधिवत ढंग से विवाह कर लिया तो जीवन पर्यंत उसका हाथ नहीं छोड़ना चाहिए, उसके साथ धोखा करके पर नारी की चौखट पर नहीं जाना चाहिए। हमें याद रखना चाहिए कि 'पर नारी' पुरुष के साथ तब तक रहेगी जब तक वह आदमी धनवान रहेगा, सेहतमन्द रहेगा और उसके उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होगा। दूसरी औरत कामवासना के दास पुरुष के प्रति कभी भी वफादार, ईमानदार, त्यागमूर्ति, समर्पित भावना वाली नहीं हो सकती। अगर कोई पुरुष अपनी पहली पत्नी को छोड़कर दूसरी औरत को पत्नी बना ले तो वह उस आदमी का नाजायज फायदा उठाती रहेगी, शोषण करेगी, दबाकर रखेगी, दुर्गति करने का तथा अपमान करने का कोई मौका खाली नहीं जाने देगी। तब उस पुरुष को अपनी पहली पत्नी की वफादारी, ईमानदारी, सेवा भावना, त्याग, सहनशीलता, समर्पण, सच्चा प्रेम आदि याद आता है, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। आजकल पुरुष पर कामवासना की भावना इस खतरनाक हद तक हावी हो चुकी है कि बलात्कार या गैंगरेप करने में किसी स्त्री की उम्र, उसके साथ रिश्ता, मानसिक तथा शारीरिक स्थिति की परवाह नहीं की जाती। संस्कृत के एक श्लोक का अर्थ है कि जब तक पुरुष की आँख की पुतली में सफेदी रहेगी तब तक उसकी कामवासना भी अतृप्त रहेगी। एक वाक्या है कि एक बार सिखों के दसवें गुरु, श्री गुरु गोविन्द सिंह जी एक युद्ध से लौटते हुए जंगल में से गुजर रहे थे। उनके साथ बहुत सारे सिख सैनिक भी थे। अचानक गुरु जी ने जंगल में एक सफेद रंग का पक्षी देखा जिसे घोगड़ कहते हैं। यह पक्षी अकेला रहता है, गंदगी पर बैठता है, मरने पर इसके मांस को कोई भी पशु या पक्षी नहीं खाता। उसे देखते ही गुरु जी ने अपनी कमान में तीर लगाया और उस पक्षी को मार दिया। इस पर उनके एक शिष्य ने उनसे पूछा.... गुरु महाराज! इस बेचारे पक्षी को आप ने क्यों मारा? यह तो हमें कुछ कह भी नहीं रहा था। तब गुरुजी ने कहा.... यह पक्षी पहले समय में एक राजा था। भक्ति किया करता था, परमात्मा का भजन भी करता था। एक दिन एक

गरीब व्यक्ति ने अपने घर में सत्संग आयोजित किया और अपनी जान-पहचान के लोगों को इसमें शामिल होने के लिए आमंत्रित किया और उसने अपने नगर के राजा को भी निवेदन करते हुए कहा... आप इस सत्संग में पधारिए! आप आ जाएँगे तो मेरी इज्जत बढ़ जाएगी। सत्संग के समाप्त होने के बाद आए हुए लोगों में भोजन परोसा जा रहा था। भोजन परोसने में उस गरीब व्यक्ति की जवान लड़की भी सहायता कर रही थी। राजा की नजर उस लड़की पर जा पड़ी और उसके मन में खोट आ गया। अपने महल में आकर उसने अपने एक सैनिक को उस गरीब आदमी के पास आदेश देकर भेजा कि अपनी लड़की मेरे महल में भेज दो। बेचारा गरीब मजबूर था उसने बड़े सम्मान और विनम्रता के साथ अपनी व्यथा अपनी बेटी को सुनाई। उस गरीब व्यक्ति की बेटी ईश्वर के रंग में रंगी हुई थी, सत्संगी थी। उसने कहा कि... पिताजी, मैं सारी स्थिति समझती हूँ! आप सब कुछ परमात्मा पर छोड़ दीजिए। इसके बाद वह महल में गई। राजा को नमस्कार कर कहने लगी.. हे राजन! हमने तो सुना हुआ है कि राजा प्रजा का पिता होता है, रक्षक होता है परन्तु आप तो रक्षक के बदले में भक्षक बने हुए हो और मेरी इज्जत आबरू लूटना चाहते हो। आपको मनुष्य नहीं बल्कि एक घोगड़ होना चाहिए था। यह कहकर उस लड़की ने अपनी देह त्याग दी। उसके कुछ समय के बाद जब राजा की मृत्यु हो गई तो उसका अगला जन्म घोगड़ का हुआ और वह कई जन्मों तक घोगड़ की जूनी में ही पैदा होता रहा और बहुत कष्ट उठाए। क्योंकि इसने कुछ समय परमात्मा का नाम भी जपा हुआ था, सत्संग भी किया हुआ था इसलिए हमने इसे मार कर इसकी सद्गति कर दी है। इसको 'पर नारी' की तरफ कामवासना की भावना पैदा होने के कारण जो सजा मिलनी चाहिए थी वह इसने भोग ली है। इस तरह 'पर नारी' की तरफ कामवासना की नजर से देखने वाले व्यक्ति का सत्यानाश हो जाता है। आजकल हमारे समाज में माहौल के खराब होने का मुख्य कारण पुरुषों द्वारा अपने घर बार में अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरी औरतों के साथ रंगरेलिया मनाना ही है जिसके कारण परिवार में मारपीट, असंतोष तथा कलह क्लेश देखने को मिलता है। तभी तो गुरबाणी में भी कहा गया है...

पर नारी की सेज पर सपने में भी ना जइयो।

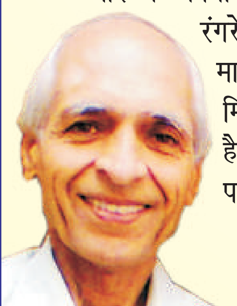


- प्रोफेसर शाम लाल कौशल
रोहतक- १२४००१ (हरियाणा)
मोबाइल- ९४१६३५९०४५

जब स्वदेशी शब्द दर्शन योग्य केवल कोष में था,
और हर पुरुषार्थ का अवसान चिर संतोष में था।
शान्त-शीतल हो चुकी थी जब तरुण विद्रोह ज्वाला,
जब विदेशी राज सत्ता कण्ठ में थी विजय माला।
दिव्य अपराजेय भारत शक्ति ने तब जो पुकारा,
युग प्रवर्तक प्रथम निःसन्देह वह स्वर था तुम्हारा।
साधना सम्पूर्ण युग की मूर्त पूंजीभूत होकर,
आ गई मानो तुम्हारे रूप में अवधूत होकर।
कर गये आचार्य शंकर रिक्त जो इतिहास काया,
धर धुरी युग धर्म की तुमने उसे सार्थक बनाया।
मुड़ चली सावेग आर्यावर्त्त की जो प्राण धारा,
हे अमर ऋषि जागरण उद्घोष था उसमें तुम्हारा।
कर दिया तुमने प्रकाशित वेद को चिर लुप्त जो था,
दे दिया अधिकार जन-जन को मनन का गुप्त जो था।
खण्ड कर पाखण्डियों को पोप लीला ध्वस्त कर दी,
एक विद्युत शक्ति सारे देश में जीवन्त भर दी।
आहिमाचल सेतु जो गूंजा कभी उन्मुक्ति नारा,
कान्ति कानन केसरी, यह मेघ गर्जन था तुम्हारा।
तुम पराजित जाति की नवचेतना के अग्र गायक,
पद्-दलित अभिमान की प्रतिशोध झंझा के विनायक।
कुसंस्कारों से छिड़े संघर्ष के निर्द्वन्द योद्धा,
रक्त की ऊर्जा अजय तारुण्य के निर्भय पुरोधा।
हो गया बलिदान पावन जो पतित का बन सहारा,
ब्रह्मचर्यानल प्रदीपित वज्र तन वह था तुम्हारा।
आर्य संस्कृति और वैदिक सभ्यता के तुम विधाता,
एक ईश्वर, एक धार्मिक ग्रन्थ के शुचि मंत्र दाता।
काल कर को तुम सुमण्डित कर गये कोदण्ड बनकर,
जब भविष्यत् का चला आग्नेय शर मार्तण्ड बनकर।
हिन्द, हिन्दी और हिन्दू जाति का चमका सितारा,
सर्वदा शुभ नाम उसमें है जुड़ा पहले तुम्हारा।
हे विमल स्वामी, परम तत्वज्ञ मुनि, ब्रह्मात्म ज्ञानी,
आर्य संन्यासी, सुधारक गुरु दयानन्दाभिधानी।
राजनीतिक दासता से मुक्त हैं भारत निवासी,
चेतना राष्ट्रीय लेकिन आज भी है देवदासी।
स्वप्न भारत भारती का है अधूरा ही हमारा,
देश के सिर पर चढ़ा है आज भी ऋषि ऋण तुम्हारा।।

- आरसी प्रसाद सिंह

# महाभारत का युद्ध ऐतिहासिक है।

अनेक विद्वानों का मत है कि महाभारत का युद्ध कोई एक घटना विशेष से सम्बन्धित नहीं है, अपितु यह विभिन्न कालों में हुई अनेक घटनाओं का समूह है। इसमें तर्क यह दिया जाता है कि विद्वान् लोग महाभारत युद्ध की निश्चित तिथि न मानकर विभिन्न तिथियाँ मानते हैं, अतः जिस महाभारत की विभिन्न तिथियाँ मानी जाती हैं, वह एक काल में हुई एक घटना नहीं हो सकती। इसी प्रकार उन्होंने यह भी सिद्ध करने का यत्न किया है कि कौरव-पाण्डव आदि एक कुल के नहीं थे। इतना सब लिखते हुए कतिपय विद्वानों ने अपने लेख में कोई भी ऐतिहासिक और ठोस प्रमाण नहीं दिया है।

सर्वमान्य है कि संवत् उसी का चलता है, जिसकी सत्ता (विद्यमानता) रही हो, जैसे यह सृष्टि उत्पन्न हुई तो इसका संवत् चला, जिसे सृष्टि संवत् कहते हैं। इसी प्रकार युधिष्ठिर संवत्, कलिसंवत् , विक्रमसंवत्, मूसा का ईसवी, शकसंवत् आदि हैं। ये सभी इनकी सत्ता को सिद्ध करते हैं। कलि संवत् को ही युधिष्ठिरी संवत् कहते हैं। पाण्डव संवत् भी इसी का नाम है। वराहमिहिर कृत 'बृहत्संहिता', 'आइने अकबरी', माधवाचार्य कृत 'राजावली', 'द्वारका मन्दिर ताम्रलेख' और बूंदी-स्थित स्तोर ग्राम के शिलालेख से यह सुतरां सिद्ध है।

'आइने अकबरी' में लिखा है- 'कलियुग के आरम्भ होते ही पहला राजा युधिष्ठिर हुआ, जिसको (अकबर तक) ४६६६ वर्ष हो चुके हैं और विक्रम तक यह ३०४४ वर्ष होते हैं।' (इसके अनुसार अब वर्तमान २०२८ विक्रम संवत् तक युधिष्ठिर को ५०७२ वर्ष होते हैं)। इसी प्रकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी महाभारत युद्ध के पश्चात् कलियुग के प्रारम्भ में जो राजा हुए हैं, उनमें सर्वप्रथम युधिष्ठर को ही माना है। महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश', में जो राजवंशावलि दी है, उसके अनुसार महाराज युधिष्ठिर से लेकर महाराज यशपाल पर्यन्त अर्थात् कलियुग के प्रारम्भ से विक्रम संवत् १२४६ तक ४२६३ वर्ष व्यतीत होते हैं। एतदनुसार भी आज विक्रम संवत् २०२८ तक युधिष्ठिर संवत् अथवा कलि संवत् को ५०७२ वर्ष होते हैं।

अभी कुछ वर्ष पूर्व हरयाणा सरकार के भाषा विभाग को डोगरी लिपि में लिखी एक प्राचीन राजवंशावली मिली है, उसमें राजाओं का जो कालमान दिया है, वह महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित काल से ही मिलता-जुलता है, उसके अनुसार भी आज संवत् २०२८ विक्रम् तक युधिष्ठिर संवत् ५०७२ ही सिद्ध होता है। 'राजावली' नामक ग्रन्थ में सुप्रसिद्ध ज्योतिष शास्त्रज्ञ पं. माधवाचार्य ने लिखा है- 'कलियुग के प्रारम्भ से विक्रम् तक ३०४४ वर्ष होते हैं। कलियुगी संवत् ३०४४ में विक्रम का राज्य आरम्भ हुआ और संवत् ३१७६ में शाल वाहन का राज्य प्रारम्भ हुआ। इसके अनुसार भी वर्तमान १८९३ शक संवत् तक कलियुगी संवत् को ५०७२ वर्ष व्यतीत होते हैं। इसके अतिरिक्त बूंदी के अन्तर्गत स्तोर ग्राम में विद्यमान पाषाण लेखों का परीक्षण सर विलियम म्यूर साहिब ने करवाया था। उनके मतानुसार इस लेख में भी युधिष्ठिरी संवत् लिखा है। एक बार सूरत के एक मन्दिर में दो शंकराचार्यों का शास्त्रार्थ हुआ था। उस शास्त्रार्थ में द्वारका के मन्दिर से प्राप्त एक ताम्र लेख दिखाया गया था। उस लेख की तिथि २६६३ युधिष्ठिरी संवत् में दी

हुई है। वह लेख ईसा मसीह से ४३८ वर्ष पूर्व लिखा गया था। इस लेख के अनुसार भी वर्तमान ईसवी संवत् १९७१ तक युधिष्ठिरी संवत् के ५०७२ वर्ष व्यतीत होते हैं।

ऐसे ही अन्य भी अनेक प्रमाण हैं, जिनसे कलिसंवत् अथवा युधिष्ठिरी संवत् का काल नितान्त एक सा और निश्चित है। अतः महाभारत युद्ध काल को अनिश्चित कहना बुद्धिसंगत नहीं है। इन लिखित प्राचीन प्रमाणों के अतिरिक्त पुरातात्विक और ऐतिहासिक प्रमाण भी हैं, जिनसे सिद्ध है कि महाभारत का युद्ध एक ऐतिहासिक युद्ध था और वह एक ही समय की घटना थी, तथा कौरव-पाण्डव आदि भी समकालीन थे और यह युद्ध कौरव-पाण्डव तथा उनके ही सहयोगियों में हुआ था।

महाभारत युद्ध के निकटवर्ती समय में जो ग्राम और नगर विद्यमान थे, वे आज भी विद्यमान हैं। इस की पुष्टि में कुछेक प्रमाण नीचे दिये जाते हैं। इनमें से अनेक आज भी उसी नाम से अथवा कुछ नामभेद (विकृत नाम) से पाये जाते हैं। महाभारत नामक ग्रन्थ में जो कथा वर्णित है, वह आज तक ज्यों की त्यों भारत के सभी प्रान्तों में जन श्रुति के रूप में विद्यमान है। यदि महाभारत का अस्तित्व नहीं होता तो यह जनश्रुति सर्वत्र क्योंकर मिलती? महाभारत का युद्ध कुरूक्षेत्र के मैदान में हुआ था। महाभारत युद्ध कलयुग से ३६ वर्ष पूर्व हुआ था। तद्नुसार महाभारत युद्ध को आज विक्रम संवत् २०२८ में ५१०६ वर्ष व्यतीत होते हैं। सभी प्रमाणों से यही काल निश्चित है। महाभारत में नकुल की पश्चिम दिग्विजय

में रोहीतक, शैरिशक, और महत्यम का वर्णन है, सो इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) के पश्चिम में रोहतक, सिरसा और महम आज भी विद्यमान हैं।

महाभारत का युद्धस्थल कुरुक्षेत्र तो आज उसी नाम से ही है। युद्ध के अन्तिम दिन जब दुर्योधन तालाब में छिपा और उसे ढूँढ़ने के लिये युधिष्ठिर, कृष्ण आदि गये थे, उस स्थान का नाम ढूँढू जोहड़ और ईक्कस आज तक भी है। संस्कृत के 'ईश दर्शने' धातु से विकृत होकर यह 'ईकस' शब्द बना है। महाभारत में वर्णित परशुराम ने जिस तालाब में अपना परशु धोया था, वह रामराहद भी आज रामरा नाम से प्रसिद्ध है। पाण्डु के नाम से पाण्डुपिण्डारा और पाण्डुखरक भी विद्यमान हैं, जो कि कौरव-पाण्डवों की सत्ता के द्योतक हैं। पाण्डवों का किला भी इसी की पुष्टि करता है। महाभारत के इन्द्रप्रस्थ से तो आज सभी परिचित हैं ही। विराट के महाराज की गायें कौरवों ने इसी लिये भगाई थीं कि अज्ञातवासी पाण्डवों का पता चल सके। उन गायों को पाण्डवों ने जिस स्थान पर छुड़ाया, वहाँ आज छुड़ानी नाम का ग्राम विद्यमान है, यह बहादुरगढ़ और झज्जर के मध्य है।

द्रोपदी की जन्मभूमि अहिच्छत्र (पांचाल प्रदेश) आज भी खण्डहर रूप में विद्यमान है। पाण्डवों की राजधानी कौशाम्बी

(प्रयाग) भी आज ध्वस्त रूप में पड़ी है। महाभारत में वर्णित योधेय, कुणिन्द आर्जुनायन, वृष्णि आदि गणों की मुद्रायें आज भी प्राप्त हैं। इसी प्रकार बहुधान्यक प्रदेश का वर्णन भी महाभारत में आया है, जिसके नाम वाले यौधेयों के सिक्के आज भी उस प्रदेश की सत्ता जतला रहे हैं। जब महर्षि वेदव्यास रचित इस महाभारत ग्रन्थ में उल्लिखित ये सब तथ्य उपलब्ध हैं तो उसी में वर्णित कौरव-पाण्डव और उनका युद्ध अनैतिहासिक कैसे हो सकता है? कैसे उसकी सत्ता को अस्वीकार किया जा सकता है?

इसी प्रकार पाण्डवों ने दुर्योधन से जो पाँच ग्राम माँगे थे वे भी आज किंचिन्नाम भेद से देखे जा सकते हैं। बिना इन ऐतिहासिक तथ्यों की खोज किये महाभारत युद्ध और कौरव पाण्डवों की अनैतिहासिकता की घोषणा करना ठीक नहीं है। महाभारत के अध्ययन से स्पष्ट ज्ञात होता है कि श्री कृष्ण

और कौरव-पाण्डव आदि का परस्पर रक्त का सम्बन्ध भी था। महर्षि व्यास ने श्री कृष्ण को बार-बार वार्ष्णेय (वृष्णिकुलोत्पन्न) नाम से सम्बोधित किया है। इसी वृष्णिकुल की कुछ प्राचीन मोहरें मुझे प्राप्त हुई हैं, जिनसे इस कुल की सत्ता का स्पष्ट प्रमाण मिलता है। यदि यह कुल न होता तो इसकी मोहरें कहाँ से आतीं? यदि इसी भाँति इन्द्रप्रस्थ, पाण्डुकिला, अहिच्छत्र और कौशाम्बी आदि की पूर्ण खुदाई करवाई जाए तो कौरव-पाण्डवों से सम्बन्धित विशिष्ट सामग्री भी मिल सकती है। जैसे कि अहिच्छत्र से कौरव-पाण्डव युद्ध के दृश्यों से अंकित विशाल मृण्मूर्तियाँ उपलब्ध हुई हैं जो कि महाभारत युद्ध की वास्तविकता का ठोस प्रमाण हैं।

नीचे स्वामी ओमानन्द जी महाराज द्वारा खोजा गया महाभारत युद्ध का एक हथियार है। बढ़ती सैक्यूलरता तथा

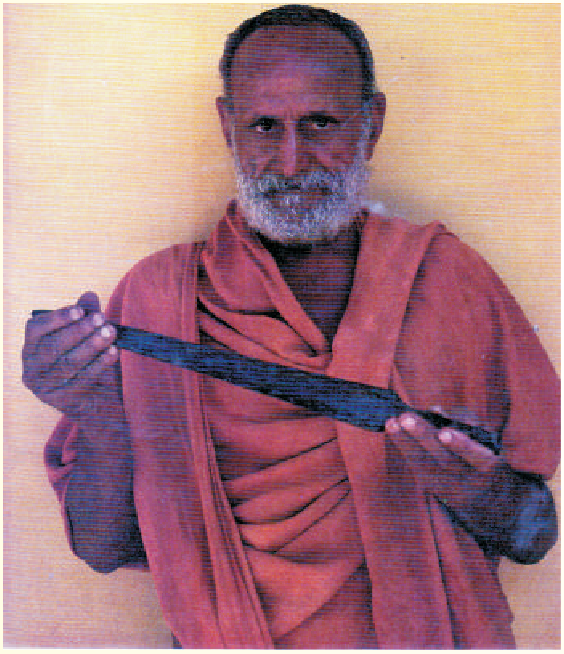

नये-नये इतिहासकार आज के नवयुवकों में यह सन्देश पहुँचा रहे हैं कि महाभारत का युद्ध काल्पनिक गाथा है। ऐसा करके आप कहाँ तक ठहरोगे? आजकल के पेड वर्कर इतिहासकार केवल हिन्दु ग्रन्थों को नीचा दिखाने मात्र हेतु ऐसा घिनौना कार्य कर रहे हैं। उनकी भावना साफ-साफ समझी जाती है। यें छद्मी लोग कुरान, बाईबल पर चूं न करते। स्मरण रहे आप आर्यसमाज को चुनौती कर रहे हैं।

लेखक - पूज्य स्वामी ओमानन्द सरस्वती
संस्थापक पुरातत्व संग्रहालय गुरुकुल झज्जर हरयाणा
प्रस्तुति- अमित सिवाहा
{यह लेख संवत् २०२८ में लिखा गया था}

**पाक के साथ १९६५ और १९७१ के युद्ध में वो 'कारनामा' किया 'पागी' ने कि मानेक शॉ ने कहा- 'पागी को बुलाओ, मैं उन्हीं के साथ डिनर करूँगा।'**

रणछोड़ दास पागी एक ऐसा ही नाम है जो थे तो महज भेड़, बकरी और ऊँट पालने वाले एक सामान्य से व्यक्ति, लेकिन जब भारत की पाकिस्तान के साथ १९६५ और १९७१ के युद्ध की बात होती है तो उनका योगदान सबसे ज्यादा नजर आता है।

रणछोड़ दास पागी का जन्म गुजरात के बनासकांठा में एक आम परिवार में हुआ था। बनासकांठा पाकिस्तान की सीमा से लगा हुआ गाँव है। रणछोड़ दास अपने परिवार के साथ भेड़, बकरी और ऊँट पालकर गुजारा करते थे।

यह काम करते हुए वे इतने हुनरमन्द हो गए कि ऊँट के पैरों के निशान देख कर बता देते थे कि उस पर कितने आदमी सवार थे। इंसानी पैरों के निशान देखकर वजन से लेकर उम्र तक का अंदाजा लगा लेते थे। पैर का निशान कितने देर पहले का है और इस पर चलने वाला कितनी दूर तक गया होगा, यह सब एकदम सटीक बता देते थे।

उनके इसी हुनर की वजह से ५८ वर्ष की आयु में बनासकांठा के पुलिस अधीक्षक वनराज सिंह झाला ने उन्हें पुलिस के मार्गदर्शक यानी 'पुलिस गाइड' के रूप में नियुक्त कर लिया।

साल १९६५ में भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध में पाकिस्तान के सैनिकों ने धोखे से कच्छ के कई गाँवों पर कब्जा जमा लिया था, इण्डियन आर्मी को एक ऐसे व्यक्ति की जरूरत थी जो चप्पे-चप्पे से वाकिफ हो और पैरों के निशान को अच्छे से समझता हो। सबसे पहला नाम आया रणछोड़ दास का। बस, इसके बाद उन्हें भारतीय सेना में स्काउट के रूप में भर्ती कर लिया गया।

### पाक के १२०० सैनिकों को चटा दी धूल

१९६५ की मुठभेड़ में लगभग १०० भारतीय सैनिक शहीद हो गए थे और भारतीय सेना की एक १० हजार सैनिकों वाली टुकड़ी को तीन दिन में छारकोट पहुँचना था। रणछोड़ दास भारतीय सैनिकों के साथ कच्छ पहुँचे और वहाँ मौजूद पैरों के निशान देखकर ही बता दिया कि वहाँ कितने पाकिस्तानी सैनिक हैं? और सैनिक कहाँ छिपे हैं? रणछोड़ दास की निशानदेही पर जब भारतीय सेना ने एक्शन लिया तो वे यह देखकर दंग थे कि रणछोड़ दास का आंकलन सटीक था। पाकिस्तानी सैनिकों को खदेड़ने और धूल चटाने के लिए भारतीय सैनिकों के लिए इतनी जानकारी काफी थी। रणछोड़ दास की इस जानकारी की मदद से भारतीय सेना तय समय से १२ घण्टे पहले ही मंजिल तक पहुँच गई।

### मानेक शॉ भी थे पागी के 'फेन'

इसी तरह रणछोड़ दास ने साल १९७१ में भारत और पाकिस्तान के बीच के युद्ध में ना सिर्फ सेना का मार्गदर्शन किया, बल्कि गोला बारूद पहुँचवाने में भी पागी ने खूब मदद की। पाकिस्तान के पालीनगर शहर पर जब भारतीय सेना ने जीतकर तिरंगा फहराया तो उसमें रणछोड़ दास की बड़ी भूमिका थी। मानेक शॉ ने खुद पागी को इसके लिए ३०० रुपए का नकद पुरस्कार अपनी जेब से दिया था।

साभार - बेव दुनिया

# कम खाओ–अधिक जियो

स्वस्थ जीवन जीने के लिए अच्छा खाना जरूरी है, लेकिन आप लम्बी उम्र चाहते है, तो कम खाइये, ये कहना है बर्मिंघम स्थित अल्बामा विश्वविद्यालय के श्री डेरेक हफमैन का। श्री हफमैन ने चूहों पर किये गये एक शोध के आधार पर यह बताया कि 'कम खाना ही लम्बी उम्र का राज है।'
शोघ के दौरान श्री हफमैन ने चूहों को विभिन्न तरह की डाइट पर रखा और पाया कि कम भोजन करने से खून में ग्लूकोज की मात्रा नियंत्रित हो जाती है और इन्सुलिन घट जाता है। शरीर में चल रही यह क्रिया ही लम्बे जीवन से जुड़ी हुई है। हालांकि इंसानों पर इसका प्रभाव बताना अभी मुश्किल है। आधुनिक समय में हमारे रहन-सहन खान-पान और जीवन के तौर-तरीकों में भारी बदलाव आया है। आधुनिक परिवारों में सप्ताह में एक दिन होटल का खाना, होटल ही सब्जियाँ, मिर्च-मसाले, कचौरी-समोसे, विविध प्रकार के पापड़ अचार, नमकीन आदि हमें अच्छे लगते हैं। चाहे इनसे शरीर व पेट खराब क्यों न हों? हकीम लुकमान ने कहा है कि इन्सान जान बूझकर अपनी कब्र अपनी जीभ से खोदता है। अधिक भोजन तथा अधिक बोलने से। बाइबल में लिखा है कि- 'जो अपने मुख तथा जिह्वा पर संयम रखता है, वह अपनी आत्मा को संतापों से बचाता है।' डॉ. बैजामिन फ्रेकलिन ने कहा है कि- 'जीवन को दीर्घ करने के लिए भोजन को न्यून कीजिए।' डॉ. बी.एम. हेगड़े ने भवन्स जर्नल में लिखा है कि- 'आप जो खाते हैं, उसका हृदय रोग या अन्य किसी रोग से कोई सम्बन्ध नहीं है जब तक कि अधिक खाकर आप मोटे नहीं हो जाते।' यह उक्ति भी प्रचलित है- 'कम खाओ, गम खाओ और नम जाओ।' हमें चाहिए कि हम हर स्तर पर शुद्ध सात्विक तथा सादे भोजन को प्राथमिकता दें। भोजन में दही, छाछ, सलाद व हरी सब्जियाँ और फलों को उपयुक्त स्थान दें। जिस प्रकार खेल के नियम होते हैं वैसे ही खाने के भी कुछ निर्धारित नियम हैं।

खाना खाने के पूर्व व खाना बनाने के पूर्व हाथों को अच्छी तरह धोना चाहिए। गन्दे हाथों से खाना बनाना व खाना दोनों ही बीमारियों को निमंत्रण देता है।

दोनों समय निर्धारित समय पर भोजन करना चाहिए जहाँ तक सम्भव हो, सभी परिवारजनों को एक साथ सभी भोजन सामग्री सामने रखकर, शान्त चित्त होकर भोजन करना चाहिए।

जिस समय आप परेशान, चिन्तित, क्रोधित, निराश या

तनाव ग्रस्त हों, उस समय भोजन नहीं करना चाहिए, क्योंकि उस समय पाचन क्रिया ठीक से काम नहीं कर रही होती। ऐसे में आप भोजन नहीं खायेंगे बल्कि भोजन आपको खायेगा।

भोजन करते समय ध्यान भोजन पर रखें। जब भी हम भोजन करते हैं, तो वह पवित्र अवसर होता है। हमें दिन भर चलते-फिरते टी.वी. देखते हुए खाते नहीं रहना चाहिए।

खानें में विविधता जरूरी है। रोज-रोज एक ही तरह का भोजन ऊब पैदा करता है। एक ही प्रकार के अन्न और सब्जियों से बहुत तरह की चीजें बन सकती हैं।

हमेशा भूख लगने पर ही खाना चाहिए। थोड़ी भूख रहते खाना छोड़ दीजिए। कहा जाता है कि- 'आँत भारी तो, माथ भारी।' ठूँस-ठूँसकर खायेंगे, तो दिमाग काम नहीं करेगा, नीन्द आयेंगी।

भोजन स्वादिष्ट व पौष्टिक हो। एक सब्जी रसदार भी होनी चाहिए। सूखी सब्जी कब्ज का कारण बनती है। भोजन के पश्चात् छाछ का सेवन करना चाहिए। सलाद का भरपूर उपयोग करना चाहिए।

खाने में कभी जल्दबाजी न करें। खाने को जितना चबायेंगे, उतना ही लाभदायक होगा। प्रकृति ने दांत इसलिए दिए हैं कि हम जो खायें, खूब चबा-चबा कर खायें।

रात में सोने से काफी पहले भोजन कर लें। देर से भोजन करना और भोजन के तत्काल बाद सो जाना स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है।

यदि मन में यह दुविधा हो कि खायें या न खायें, तो मत खाइये। भारी शारीरिक श्रम अथवा थकान के तत्काल बाद भोजन न करें। कुछ देर रुकें, विश्राम करें, उसके बाद भोजन करें।

शुगर, जंक-फूड, फास्ट-फूड, मिठाइयाँ आदि खाने की सूची में से निकाल दें। कैण्डी, शहद और सॉफ्ट ड्रिंक से भी दूर रहें।

मौसमी फल खायें। ज्यूस की जगह साबुत फल बेहतर है। ज्यादातर फल छिलके सहित खायें। छिलकों में प्रोटीन पाया जाता है।

खाने में सफेद चीजों जैसे आलू, मैदा, चीनी, चावल, नमक, घी आदि का प्रयोग सीमित मात्रा में होना चाहिए। इसके विपरीत मल्टीग्रेन दालें, गेहूँ, चना, जौ, मटर, गाजर, पालक, मैथी, सेब, पपीता पर ज्यादा ध्यान दें।

दिन में दो से तीन लीटर पानी व तरल पदार्थ लें। पानी न सिर्फ फैट कम करता है, बल्कि शरीर से जहरीले तत्वों को भी निकालता है। भूख कम करता है तथा कब्ज से भी छुटकारा दिलाता है। प्रातः ऊषः पान करें।

मद्यपान, धूम्रपान व अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन से परहेज करें। ये व्यक्ति को उत्तेजित करती हैं। किसी महापुरुष के कथनानुसार नशीली चीजें थके घोड़े में चाबुक का काम करती हैं।

खाने के बाद पान-सुपारी, पान-पाउच इत्यादि खाने के बजाय सौंफ और मिश्री या सिकी हुई सौंफ खायें। इससे मुँह में अच्छी गन्ध आयेगी तथा स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी।

लेखक - अभय कुमार जैन
स्वतंत्र लेखक, 'तृप्ति', बंदा रोड
भवानी मण्डी (राजस्थान)

## श्री विजय शर्मा को पुत्र शोक

वज्रपात की भाँति असीम वेदना से भरा हुआ दुखद समाचार है

कि भीलवाड़ा आर्य समाज के प्रधान, इस न्यास के वरिष्ठ उपाध्यक्ष, जिनकी गिनती आर्य समाज के वरिष्ठ नेतृत्व में की जाती है, ऐसे भाई विजय शर्मा जी के सुपुत्र श्री अभिषेक का अल्पायु में आकस्मिक दुखद निधन हो गया। यह सूचना मिलने के बाद बहुत देर तक तो स्तब्ध रह गए। विधाता के इस नियम की क्या व्याख्या की जाए यह समझ से परे है। घर में अभी विवाह की तैयारियाँ चल रहीं थीं और वो हो गया जिसकी कल्पना भी किसी ने नहीं की थी।

हमारे माननीय भ्राता विजय जी व भाभी साहिबा की व समस्त शर्मा परिवार की इस समय क्या स्थिति होगी उसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। दिनांक १२ अक्टूबर २०२१ को प्रातः काल भीलवाड़ा स्थित मुक्तिधाम में अन्त्येष्टि संस्कार अनेक आर्य विद्वानों, आर्य नेताओं की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर डॉ. सोमदेव शास्त्री, आचार्य वागीश जी, न्यास अध्यक्ष अशोक आर्य तथा अजमेर के डॉ. वेदप्रकाश जी का संक्षिप्त उद्बोधन हुआ। मंत्रपाठ एवं संचालन डॉ. मोक्षराज ने किया।

हम श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के सभी न्यासीगणों की ओर से तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्यों की ओर से हार्दिक संवेदना संप्रेषित करते हुए परमपिता परमेश्वर के चरणों में विनय करते हैं कि जहाँ दिवंगत आत्मा को अपनी ममता की छांव में रखते हुए श्रेष्ठतम जन्म उपलब्ध करायें, वहीं शोक संतप्त परिवार को वह धैर्य व क्षमता प्रदान करें, जिससे वे इस दारुण दुख को सहन करने में समर्थ हों।

- अशोक आर्य, अध्यक्ष-न्यास

# समाचार

## तन से ज्यादा मन के इलाज की जरूरत

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से १७ अक्टूबर २०२१ को रविवारीय सत्संग के अन्तर्गत मौसमी बीमारियाँ कारण एवं उपचार

पर चर्चा कार्यक्रम का अयोजन किया गया। उपस्थित श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए वैद्य आचार्य वेदमित्र ने कहा कि हर मनुष्य सुखी रहना चाहता है किन्तु फिर भी दुखी रहता है। इसका कारण है हमारी अज्ञानता। खान-पान, रहन-सहन, कार्य व्यवहार आदि की सही जानकारी नहीं होने के कारण हम बीमार/अस्वस्थ हो जातें हैं। आज मनुष्य तन से ज्यादा मन से अस्वस्थ हैं। तन से ज्यादा मन को स्वस्थ रखना आवश्यक है।

आर्य समाज के प्रधान भँवर लाल आर्य ने स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री संजय शाण्डिल्य ने किया। डॉ. अमृत लाल तापड़िया, कृष्ण कुमार सोनी, श्रीमती चन्द्रकला आर्या, डॉ. दीनदयाल शर्मा, सुभाष कोठारी, अम्बालाल सनाढ्य, निरंजन नेभणानी, श्रीमती सरला गुप्ता, डॉ. सोहन लाल माथुर आदि की सार्थक उपस्थिति रही।

- संजय शाण्डिल्य, मंत्री

## पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल, चित्तौड़गढ़ में डेढ़ दिवसीय ब्रह्म यज्ञ कार्यशाला दिनांक २५ एवं २६ सितम्बर २०२१ को सम्पन्न हुई

२५ सितम्बर को प्रथम दिवस का प्रातः कालीन सत्र गुरुकुल की बच्चियों द्वारा ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों के पाठ के साथ प्रारम्भ हुआ। जिसमें ईश्वर भक्ति के भजन भी प्रस्तुत किए गए। इसके

पश्चात् डॉक्टर सोमदेव जी शास्त्री ने ब्रह्म यज्ञ के विषय में विस्तार से बतलाते हुए कहा कि परमात्मा ने हमें शुद्ध वायु, जल एवं नाना प्रकार की उपयोगी वस्तुएँ प्रदान कीं तथा सृष्टि की रचना कर हमारे जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए वेदों का ज्ञान दिया। अतः परमात्मा का धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए हमें प्रातः सायं संध्या करनी चाहिए। संध्या के प्रत्येक मंत्र का विश्लेषण करते हुए कहा कि हम संध्या गायत्री मंत्र से प्रारम्भ करते हैं जिसमें हम परमात्मा से सद्बुद्धि की प्रार्थना करते हैं। आचमन मंत्र से लौकिक एवं पारलौकिक सुख की कामना करते हुए अंग स्पर्श मंत्र से यश एवं बल की प्राप्ति की प्रार्थना करते हुए मार्जन मंत्र से अहंकार रहित जीवन की कामना करते हैं। प्राणायाम मंत्र से ईश्वर के गुणों का स्मरण करते हुए और अघमर्षण मंत्रों से पाप रहित जीवन की कामना करते हुए मनसा परिक्रमा मंत्रों से ईर्ष्या रहित जीवन की कामना करते हुए उपस्थान मंत्रों से परमात्मा की निकटता प्राप्त करते हुए गायत्री मंत्र से उन्हें सद्बुद्धि की प्रार्थना करते हैं। समर्पण मंत्र द्वारा धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष की प्राप्ति की प्रार्थना करते हुए नमस्कार मंत्र द्वारा परमात्मा को बारम्बार नमस्कार करते हैं।

आचार्य जीववर्धन जी शास्त्री ने इस प्रकार की सैद्धान्तिक विषयों की कार्यशाला की आवश्यकता बतलाते हुए कहा कि पाखण्ड और आडम्बर में पड़ने के कारण हमारी पूजा पद्धति ही विकृत हो गई है आज के भागम भाग के जीवन में पूजा में झटका, लटका और पटका प्रथा चल रही है जो कि अवैदिक है। दोपहर कालीन सत्र में गुरुकुल संचालन समिति की बैठक समिति के अध्यक्ष श्री विक्रम जी आंजना की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सायं कालीन सत्र में संध्या के पश्चात् शंका समाधान किया गया।

दूसरे दिन २६ सितम्बर को प्रातः कालीन सत्र में संध्या हवन किया गया तथा शिविर आये महानुभावों ने अपने अपने अनुभव बताए। अन्त में समिति के अध्यक्ष विक्रम आंजना कोषाध्यक्ष कुंजी लाल पाटीदार ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा मंत्री श्रीमती सरला गुप्ता ने सभी का आभार प्रकट किया।

## 'स्वर्ण प्राशन का तृतीय शिविर आयोजित'

हापुड़, आर्य समाज मंदिर में स्वर्ण प्राशन का तृतीय शिविर आयोजित किया गया। शिविर संयोजक अंकित गर्ग ने बताया कि जन्म से लेकर सोलहवें वर्ष तक के बच्चों में आन्तरिक रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने के लिए स्वर्ण भस्म युक्त औषधि, शुद्ध गौ घृत व शहद के सम्मिश्रण से तैयार, सबको चटाई जाती है, जो आज डाबर इण्डिया के सहयोग से आर्य समाज, हापुड़ में चल रहे आर्य धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय के डॉक्टर की देख-रेख मे दी गई। यह औषधि बच्चों को कोविड १९ के प्रभाव से बचने मे भी सहायक होती है। आज लगभग २४० बच्चों को पिलायी गयी है।

मंत्री अनुपम आर्य ने बताया की यह निःशुल्क शिविर प्रत्येक माह लगाया जा रहा है और आगे भी इसी प्रकार चलता रहेगा। आगामी रविवार १० अक्टूबर को डेंगू एवं मलेरिया के प्रभाव से बच्चों को बचाने के लिए होम्योपैथी औषधि निःशुल्क पिलाई जाएगी।

शिविर में आर्य समाज के संरक्षक आनन्द प्रकाश आर्य, प्रधान नरेन्द्र कुमार आर्य, विनेश गर्ग आदि ने सहयोग किया।

## बहुत दुःखद आर्य जगत् को एक और आघात
## श्रद्धेय स्वामी चन्द्रवेश सरस्वती जी नही रहे

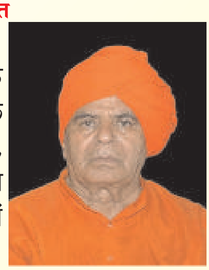

आर्य जगत् के महान् त्यागी तपस्वी वरिष्ठ संन्यासी व्याकरण के सूर्य शम्भूदयाल-वैदिक संन्यास आश्रम, दयानन्द नगर गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज का आकस्मिक निधन आश्रम में हो गया। ईश्वर की ऐसी ही इच्छा थी।

स्वर्गीय स्वामी जी आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों के महान् प्रचारक और प्रसारक थे। उनके निधन के समाचार से पूरा आर्य जगत् शोक-संतप्त है। दयालु परमेश्वर से स्वामी जी की आत्मा की सद्गति के लिए हम सब प्रार्थना करते हैं। विनम्र श्रद्धांजलि। स्वामी जी को कोटि-कोटि नमन।

हमारे देश में एक विशेष आदत जिसकी नींव आजादी के साथ ही पड़ गई थी, अब बहुतायत में देखने को मिल रही है, और वह है हिन्दू जिन देवी-देवताओं में अपनी आस्था रखते हैं, उनके संदर्भ में अपमानजनक बातें कहना, मजाक उड़ाना अथवा निंदनीय कृत्य करना। हम अनेक चित्रकारों को जानते हैं जिन्होंने इन देवी-देवताओं के अवमानना पूर्ण चित्र बनाए।

अभी हाल में कोलकाता में दुर्गा पूजा के अवसर पर एक चित्रकार श्री सनातन डिंडा ने अपनी एक पेंटिंग में माँ दुर्गा को हिजाब में दिखाते हुए लिखा 'माँ आसछेन' अर्थात् माँ आ रही है। यहाँ हिजाब में दुर्गा को दिखाने का क्या अर्थ हो सकता है? दुर्गा शक्ति की प्रतीक हैं, उन्होंने आसुरी शक्तियों का संहार किया, उन्हें महिषासुर मर्दिनी कहा जाता है, उनके हाथों में शस्त्र-अस्त्र दिखाई देते हैं। ऐसी वीरांगना शक्ति की देवी दुर्गा को हिजाब में दिखाना एक ऐसा कृत्य है, जिसका कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया जा सकता, सिवाय इसके कि चित्रकार उन्हीं लोगों में से एक है जो उपरोक्त गर्हित मानसिकता से ग्रसित हैं। मध्यप्रदेश में एक सामाजिक संस्था ने गणेश उत्सव के समय में गणेश जी की प्रतिमा के हाथ में सेनेटरी नैपकिन ही थमा दिया। उनका कहना है कि वे इस माध्यम से जनता में सेनेटरी नैपकिन के लिए जागरूकता पैदा करना चाहते हैं। इसके लिए उन्होंने गणेश जी का सहारा लिया। यह भी वही कुत्सित मानसिकता है जो कि यदा-कदा परिलक्षित होती रहती है।

अभी हाल ही में दशहरे के अवसर पर एक मेडिकल कॉलेज के छात्रों ने रामलीला का मंचन किया। उसमें शूर्पणखा के प्रस्ताव और उनका उत्तर श्री राम और श्री लक्ष्मण के द्वारा दिए जाने का जो सन्दर्भ है, वहाँ अत्यन्त अश्लील और अशालीन संवादों का प्रयोग करते हुए इन लोगों ने समस्त मर्यादाओं का उल्लंघन किया। स्पष्ट है कि आज का नवयुवक अपनी सांस्कृतिक विरासत से बिल्कुल परिचित नहीं है बल्कि उसे उनका मजाक उड़ाने में आनन्द मिलता है और वह ऐसे कुकृत्य में तनिक भी विचलित नहीं होता। यद्यपि मामला सामने आने पर उन छात्रों ने माफी माँगी है। परन्तु इस प्रश्न का उत्तर आज के समाज शास्त्रियों को खोजना ही होगा कि आखिर क्या कारण है कि किसी धर्म विशेष के इन प्रतीकों के अपमान के प्रकरण बढ़ते ही जा रहे हैं और यह भी कि इसका समाधान क्या है? हमारा विचार है कि अगर इसका शीघ्र समाधान नहीं हुआ तो स्थिति कभी भी विस्फोटक भी हो सकती है।

- प्रस्तुति- नवनीत आर्य

## वैज्ञानिकों को चिड़िया के ब्रेन सिग्नल पढ़ने में कामयाबी मिली, इससे बोल न पाने वाले इंसानों के मन की बात समझी जा सकेगी

आवाज खो चुके लोग भी अब अपने मन की बात आसानी से दूसरों तक पहुँचा सकेंगे। इसके लिए जेबरा चिड़िया के ब्रेन सिग्नल का इस्तेमाल किया जाएगा। वैज्ञानिकों के मुताबिक न बोल सकने वाले लोगों में और एक विशेष प्रकार की चिड़िया के ब्रेन सिग्नल में कई समानताएँ मिली हैं।

अब वैज्ञानिक एक ऐसा डिवाइस बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे मूक बधिर लोग भी अपनी भावनाएँ सिग्नल के जरिए व्यक्त कर सकें। यह कारनामा अमेरिका के सैन डिएगो की कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने कर दिखाया है। इसकी टेस्टिंग जेबरा नाम की चिड़ियों पर की गई है।

### सिलिकॉन इम्प्लांट्स की मदद से रिकॉर्ड किए सिग्नल

नर जेबरा चिड़िया जब गाना गा रही थी, तो वैज्ञानिकों ने सिलिकॉन इम्प्लांट्स की मदद से उसके ब्रेन सिग्नल को रिकॉर्ड कर लिया। फिर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से यह भविष्यवाणी की गई कि चिड़िया अगला गाना कौन सा गा सकती है।

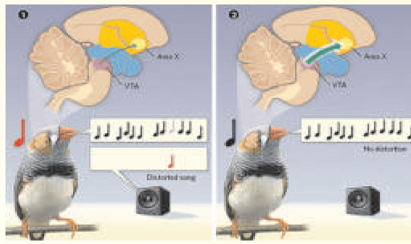

वैज्ञानिकों ने दावा किया कि, इसी भविष्यवाणी करने के तरीके से उन लोगों के मन की बात को समझा जा सकता है, जो बोल नहीं सकते। इससे तकनीक को एक डिवाइस में तब्दील किया जा सकेगा और पता चल सकेगा कि वो क्या कहना चाहते हैं।

### मरीजों की 'नई आवाज' बनेगी तकनीक

वर्तमान में ऐसे आर्ट इम्प्लांट्स मौजूद हैं, जो लोगों की आवाज को सुनकर शब्दों में तब्दील कर सकते हैं, लेकिन हमारी नई तकनीक उनके ब्रेन को समझकर उनकी 'नई आवाज' बनेगी।

निःस्वार्थ रुप से सबके प्रति सेवाभाव रखने वाले, सौम्य व्यक्तित्व के धनी, इस न्यास के न्यासी **श्री बलराम जी चौहान** को उनके जन्म दिवस के अवसर पर ढेरों बधाइयाँ।

18 नवम्बर

### सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०६/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०६/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्रीमती सुनीता सोनी; बीकानेर (राज.), श्री इन्द्रजित् देव; यमुनानगर, प्रधान जी; आर्य समाज, बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी सोनी; बीकानेर (राज.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्रीमती सुप्रिया चावला; जालन्धर (पंजाब), श्रीमती कंचन देवी; बीकानेर (राज.), श्री फूलसिंह यादव; मुरादनगर, डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा), श्री आर.सी. आर्य; कोटा (राज.)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 14 पर अवश्य पढ़ें।

# सत्यार्थ-पीयूष ईश्वर की त्रिकालज्ञता

ईश्वर के विषय में एक भ्रान्त धारणा समाज में प्रचलित है कि ईश्वर भूत, वर्त्तमान और भविष्यत् की घटनाओं को जानता है, त्रिकालदर्शी है। जीव ने अभी जो कर्म किये ही नहीं ईश्वर उन्हें भी जानता है, अगर त्रिकालज्ञता का यह अर्थ निकाला जावे तो 'जीव कर्म करने में स्वतंत्र है' इस सिद्धान्त का भी खण्डन हो जावेगा। क्योंकि ऐसा मानने पर भविष्य में जो कुछ भी होना होगा वह निश्चित हो जावेगा। कारण कि परमात्मा जब भविष्य में जीव द्वारा किये कर्मों को जानता है तो जीव को वैसा ही करना होगा अन्यथा परमात्मा का ज्ञान मिथ्या हो जावेगा जो सम्भव नहीं है। अतएव जब जीव को निश्चित हो चुके कार्य को ही करना है तो वह कर्म करने में स्वतंत्र कहाँ हुआ? वह तो परतंत्र हो गया। यह भी विचारणीय है कि जब ईश्वर द्वारा निश्चित कर्म ही जीव द्वारा किया गया तो ईश्वर द्वारा उसका फल देना भी अयुक्त होगा।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में ईश्वर सम्बन्धी अन्य बिन्दुओं की तरह ही इसकी भी अपूर्व व्याख्या की है। वे लिखते हैं कि 'जीवों के कर्म की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता ईश्वर में है, स्वतः नहीं। जैसा स्वतंत्रता से कर्म जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान के ज्ञान और फल देने में ईश्वर स्वतंत्र और जीव किंचित् वर्त्तमान और कर्म करने में स्वतंत्र है।'

वस्तुतः भूत, वर्त्तमान और भविष्यत् ये विभाजन केवल जीवों की अपेक्षा से हैं। ईश्वर तो सदैव एकरस है। अतः उसका ज्ञान तथा कर्म नित्य है। जैसा जीव कर्म करता है, ईश्वर वैसा ही जानता है। एक जीव में कौन-कौन सा कर्म करने, किस सीमा तक करने तथा वह किस-किस प्रकार से कर सकता है, यह सम्पूर्ण ज्ञान ईश्वर को है, परन्तु क्योंकि जीव कर्म करने में स्वतंत्र है, अतः यह निश्चित पहले से ही कैसे हो सकता है कि वह कब, कैसा, कितना व किस प्रकार करेगा अथवा करेगा भी कि नहीं? **'कर्तुमकर्तुम् अन्यथा कर्तुम'** अर्थात् करे, नहीं करे या अन्य प्रकार करे', यह सिद्धान्त जीव पर पूरी तरह लागू होता है। अतः सही यही है कि जीव का कर्म करना और ईश्वर का उसे जानना एक साथ होता है। कर्म ही नहीं यह बात विचारों पर भी लागू है। जिस क्षण मनुष्य कोई विचार करता है तत्क्षण ईश्वर जान जाता है। ईश्वर के लिये काल विभाजन नहीं। ईश्वर की त्रिकालज्ञता जीवों के कर्म की अपेक्षा से है स्वतः नहीं।

ईश्वरीय ज्ञान वेद के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घाटित सत्य-

**नैमित्तिक ज्ञान ( वेद ) की आवश्यकता**

मनुष्य योनि को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यह योनि भोग योनि तो है ही साथ ही कर्म योनि भी है। अन्य सभी योनियाँ मात्र भोग योनि हैं। अर्थात् उनको, जब तक जीवन है तब तक खाने, पीने, संतति उत्पन्न करने, प्राण रक्षा करने आदि कार्य ही करने हैं वह भी जितना-जितना स्वाभाविक ज्ञान उनका है, उसके सहारे। वे इस ज्ञान में ऐसी कोई उन्नति नहीं कर सकते जो उनके लिए लाभकारी हो क्योंकि ईश्वर प्रदत्त स्वाभाविक ज्ञान में वे स्वयमेव वृद्धि करने में असमर्थ हैं। हाँ! किसी प्रशिक्षक के सिखाने से कुछ मानवेतर प्राणी सीमित क्रियाएँ सीख अवश्य जाते हैं।

पशु-पक्षियों में नैमित्तिक ज्ञान ग्रहण करने की क्षमता न होने के कारण प्रभु ने उन्हें पर्याप्त स्वाभाविक ज्ञान प्रदान कर दिया है। उनके बच्चों में भी आत्मनिर्भरता अतिशीघ्र विकसित होती है अर्थात् मनुष्य के बालक की भाँति माता-पिता अथवा संरक्षक के आश्रय की आवश्यकता अत्यल्प होती है।

परन्तु मनुष्य में यह स्वाभाविक ज्ञान भी पशु-पक्षियों की अपेक्षा काफी कम होता है क्योंकि प्रभु ने उसे ऐसी क्षमता दी है कि वह किसी के द्वारा सिखाये जाने पर अर्थात् नैमित्तिक ज्ञान प्राप्त करने पर स्वाध्याय, चिन्तन, मनन, अभ्यास, परिश्रम एवं शोध से अपार उन्नति कर सकता है। परन्तु किसी के सिखाये बिना भाषा और ज्ञान दोनों में शून्य रहकर जीवन-यापन भी कठिनता से कर पाता है, अभ्युदय और निःश्रेयस की सिद्धि जो कि मानव जीवन का उद्देश्य है, की तो बात ही क्या कहनी?

कुछ लोगों का कहना है कि मनुष्य अपने चारों तरफ के वातावरण, प्रकृति को देख ज्ञान प्राप्त कर सकता है, पर यह सत्य नहीं है। यदि ऐसा होता तो प्रकृति की गोद में पलने वाली वनवासी जनजातियाँ भी सुसभ्य व सुसंस्कृत होती क्योंकि प्रकृति रूपी पुस्तक तो सदैव उनके समक्ष खुली हुई है। इससे सिद्ध होता है कि प्रकृति रूपी पुस्तक को भी किसी के पढ़ाए बिना समझा नहीं जा सकता। **क्रमशः .......**

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

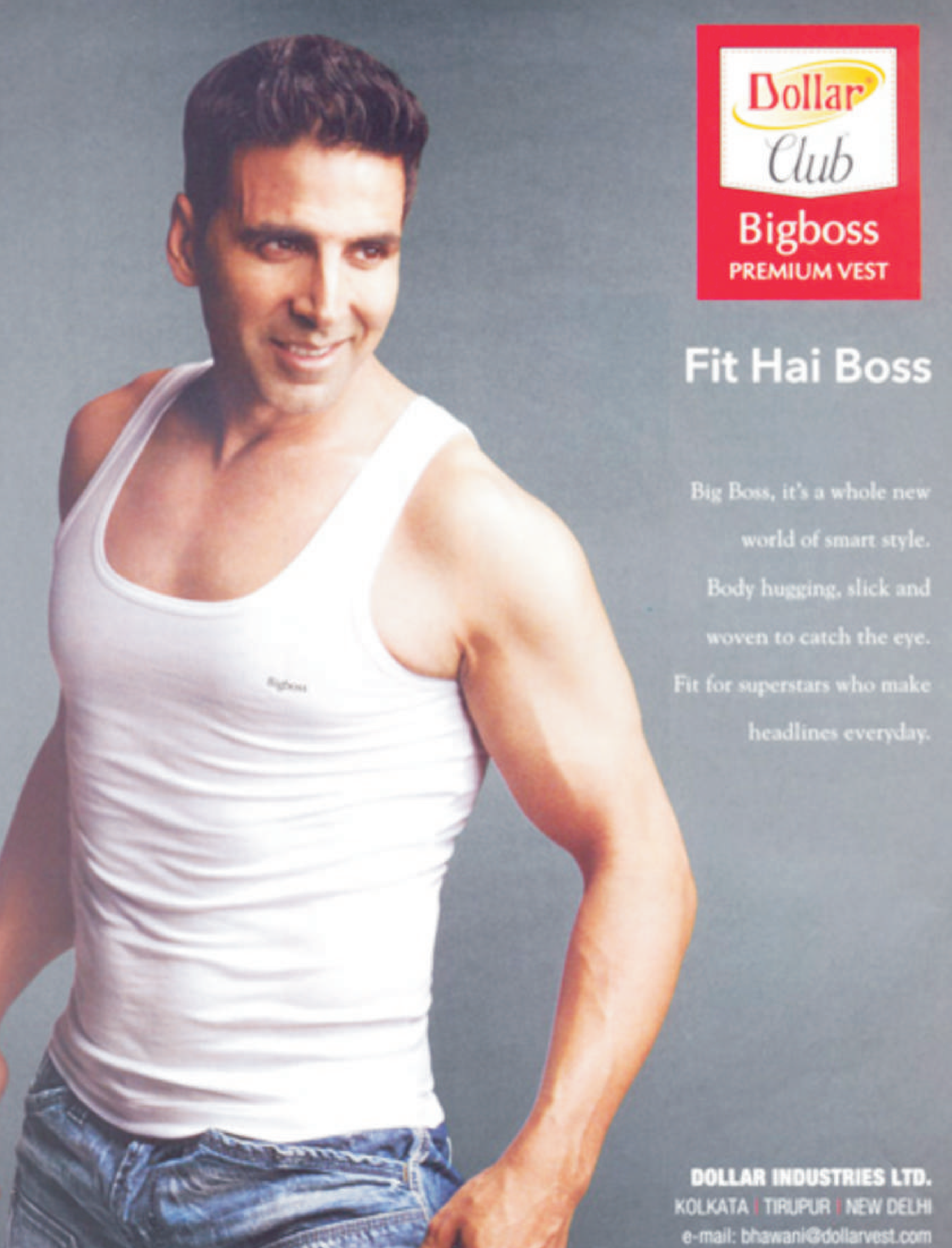
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Big Boss, it's a whole new
world of smart style.
Body hugging, slick and
woven to catch the eye.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com

जिस में उपकारक प्राणियों की हिंसा अर्थात् जैसे एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी में कुछ कम चार लाख मनुष्यों को सुख पहुँचता है, वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दें। ......... इन पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा। देखो! जब आर्यों का राज्य था तब ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे।

- सत्यार्थ प्रकाश, दशम समुल्लास पृष्ठ २६५-२६६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर